श्रीगोपीजनवल्लभाय॥ अथ श्रीसूरदास
कृत प्रेमामृत टीका भाषा श्रीहरिराय
जीकृत लिख्यते मंगलाचरण श्रीगुसांईजीके
तहां प्रथम श्रीहरिरायजी श्रीआचार्यजी महाप्रभु
नकों नमस्कार करि गुसांईजी सो वीनती करत हें
सो के प्रेमामृत टीका करिवे मो योग्यता दे
यौ कहे ते जो प्रेमामृत जो ग्रंथ श्रीआचार्यजी म
हाप्रभुनकी कृपाते श्रीगुसांईजी आप वर्णन कि
ये हे तामें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों श्रीपुरुषो
त्तम रूपते धर्म सहित जैसे श्रीकृष्ण हे तादृश
प्रकार के वर्णन कीये हें ऐसे श्रीआचार्यजी म० को
में वारंवार नमस्कार करत हों सो मंगलाचर
ण एक श्लोक करिके कहत हें श्लोक नमो आचार्य
लीलाब्धि प्रेमसिंधु महाधर यानो पायस सर्व
कृत श्रीविट्ठलेनमोऽस्तुते॥ १॥ या को अर्थ श्री
आचार्यजी म० आपु कैसे हें जिनकी श्रीठाकुर
जी की लीला हे सो परम गंभीर हे रससमुद्रवत हें
सो श्रीआचार्यजी म० के हृदय विषे स्थापन हे सो
अमृत रूपी लीलारस हे तिनके पानकर्ता श्रीगु

जी आप हैं, ताते तिनकी श्रीठाकुरजी की ली
सो सब श्री आचार्य जी महाप्रभु आप अनुभव
के आपने हृदय में राखत हैं, ऐसे श्री आचार्य
हाप्रभुनको मैं बार बार नमस्कार करत हों
नके पुत्र श्री विट्ठलनाथ जी सो श्री आचार्य मह
भुनके हृदै श्री चरणारविंद हैं तिनके पानक
ई जी आप हैं तिनको मैं बार
नमस्कार करत हैं जो मो ऊपर प्रसन्न होवें
जो मनोरथ है, जो प्रमाननकी टीका करिवे
योग्यता मोको देउ यापकार मंगलाचरण के
के विनती करी अब प्रमाननको प्रथम श्लोक
कहत हैं श्लोक ठाकुर कृष्णप्रमा मत्त रसभरेण
तिभरिता विहारं कुर्वाण व्रज पति विहाराब्धि
सदा॥ प्रिया गोपी भर्तुः स्फुरतु सततं वल्लभ
दृत्ति प्रथा वत्स्माकं हृदि सुभगम् तिसकर
णा ॥१॥ याको अर्थ श्री गुसांई जी ऐसे प्रकाश करत
श्री कृष्ण तिनके जे धर्म हैं ते सब श्री आचार्य जी मे
के धर्म हैं सब माको कहत हैं जो जैसे श्री कृष्ण जो

तिनके हृदैमें श्री अंगअंगमें प्रेमभयोहै सो
म परम मिष्ट है जैसें अमृत परम मिष्ट है तैसें
गमें ऐसो रस भयो है जो समातनाहीहै तब
श्रीठाकुरजी आपु मनमें विचार कीयेजो यह रस
को नको दान करें यारसकोपात्र तो व्रिजभक्त
हैं तिनको करें याप्रकार व्रिजके प्रति जो श्रीठा
कुर जीसो विचार कीये ता पिछें फेर विचार कि
कै जो कौन प्रकार दान करें कौन द्वारा दान करें सो
कहत हैं जब एको तसमय कालसंबंध होय तब
ऐसो रस दान कीयोजाइ तातें ऐसें श्रीठाकुर
जी आपु अपने हृदयमें विचार करिकें शरद
ऋतु को राच है परम रसरूप है जानिकें ता पर्वप
वनमें रात्रिके समय वासुरी वजाइ सो ऐसी
श्रीठाकुरजी आपु वांसुरी वजाई जो आपने
पने घरमें व्रिजवधू रही तिनके कानमें श
ब्द पर्यो सो विरहकरिकें व्याकुल भई सो को
ई दूधपीवाने हेतु घरमें संगनें आगें है और
कोई सुनतही उठिचली कोऊ आप
पतिको जिमावतहैं सो बांसुरीको शब्द सु
नतिही उठिचली यों याप्रकार जो व्रिज

आपुनेघरकार्यकरतहुती सोसबवस्त्रो
लटकहेंपुहिरे वस्त्रहूं फाहेकेकहेंपुहिरे
हैते जोश्रीकृष्णकोजोप्रेमरसहे सोयाउ
आयकेव्रिजभक्तनकेश्रवणद्वाराहृदय
यभीतरप्रवेशभयोहै तातेशरीरकोकछू
धिनाहिरहीहै सोवेणुकोजोस्वरहै ताहीं
रसवहुली तबयोगमायाजोहै सो
प्रभुजीकीदासीहैं सोमनमेंविचारखोगेश्री
सन्मुखव्रिजभक्तचली है सोकछूमाऊ
नकोशिंगारकरोचाहिये सोकाहेतेजोभग
वदीयुकोसेवाआवशकहे तातेयोगमायाव्रि
जभक्तनकेआभरणवस्त्रसबउलटरहेहुते सो
सबसंभवनायदीये औरकोईएकगोपीजनन
करराखेहुती तबतिननेश्रीकृष्ण
कोध्यानकरिकें विरहकरिकें आपुनेशरीरको
त्यागकीयो सोसबतेंपहिलें श्रीठाकुरजीकोआ
यकेंप्राप्तभई जोयाप्रकारगोपीजनकोंभुलाय
के आपुनेश्रीअंगमेंजोरसहुतो तिनकोंदानप्र
जभक्तनकोंदयोहैं तैसेहीश्रीआचार्यजीम
हाप्रभुआपपरमकृपाकरिकें दैवीजीवनके
उद्धारार्थप्रकटहोयकेंपृथ्वीपरिक्रमाको

तबजीवनकोंसंसारमोंमोहितदेखें तापाछें श्री
गोकुलश्रीआचार्यमहाप्रभुआपपाछें तहजीव
नकोउद्धारकोविचारमनमेंकरतहुते ताही
समयश्रीपूर्णपुरुषोत्तमप्रगटहोयके ब्रह्मसंबंध
कीआज्ञादीये जोजाजीवकोंतुमब्रह्मसंबंधकरा
वगे तिनकेसबदोषदूरहोयगें तिनकोंमेंअंगी
कारकरूंगो तबश्रीआचार्यजीमहाप्रभुआपके
साहें जैसेश्रीपूर्णपुरुषोत्तमकेश्रीअंगअंगमें
रसभरयोहुतो सोनिजभक्तनकेहृदेमेंवर्णनाय
द्वारादानकीये तैसेंहीश्रीआचार्यजीमहाप्रभु
केश्रीअंगमेंश्रीठाकुरजीकोलीलारूपजो
कोईरसहे सोदैवीजीवनकोंदानकरतहें सोजे
प्रकारश्रीठाकुरजीआपवेणुद्वाराव्रजभक्तनकों
रसदानकरतहें तैसेंहीश्रीआचार्यजीआपनाम
समर्पणद्वारा अपनेसेवकनकोंरसकोदानकी
योहे औरश्रीठाकुरजीरसकोदानकरिकेंव्रज
भक्तनकों तापीछेउनकेसंगरमणकीये ता
नाप्रकारकीविहारलीलाकीये तैसेंहीश्रीआचा
र्यजीआपअपनेदैवीजीवनकोंनामसमर्प
णद्वारारसकोदानकरिकें तापाछेंअपनेसेव
कनकेसंगनानाप्रकारकीलीलाकरतहें

रत्नकृपानिज्ञदेवीजीवपरश्रीमुखवचनसु ।
ाड़ू कृतेतपुविभुगलगीतकीरसवरपावरखा
१ पाप्रकारअपनेसेवकनकोसेगकथारपुजो
अमत तिनकोवरखाकरतहैं औरजानीवकाव
हलवंधकरावतहैं तिनकेअगवतशेवापध
रावतहैं जोसंपन्नहोय तिनकेघरस्वरूपशेवा
पधरावतहैं औरजिनसोंशेवानाहीसधसक
तहैं तिनसोंश्रीगोवर्द्धननाथजीकोशेवाकरा
वतहैं औरजिनकेघरस्वरूपशेवा तथावल्ल
शेवापधरावतहैं सोजहांश्रीआचार्यजीआपुस
ववस्तुकेंभोगकरतहैं सोकाहेतें जोश्रीवल्ल
भाष्टकमेंश्रीगुसांईजी आपश्रीआचार्यजीमहा
प्रभुनकोस्वरूपवर्णनकीयेहै तातेजोसामग्र
वेसेषकरिकेंश्रीठाकुरजीकोंसमर्पणकरतेंहैं
सोश्रीठाकुरजीआपश्रीमुखारविंदद्वाराअंगी
कारकरतहैं सोमुखारविंदरूपतोश्रीआचा
महाप्रभुआपहैं तातेंयहभोगकोंश्रीआचार्य
महाप्रभुआपअंगीकारकरतहैं ताहीतेंजे
सवसामिग्रीकरिकें श्रीप्रभुजीकेंआगेधरि
प्रकारसोंविनतीकरतहैं जोमहाराजाधि
श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकीकानितेंअंगीका

तब श्रीठाकुरजी आप श्रीआचार्यजी के कीर्तन
जीकार करि सामिग्री आरोगत हैं या प्रकार श्री
आचार्यजी आप अपने सेवकन के घर सब ठौर
विहार करत हैं और श्रीठाकुरजी जब वृंदावन
वेणुनाद करत हैं तब व्रजमें जे जीव हैं पशुप
क्षी तिनमें जैसो अधिकार है तिनको ताहि भां
ति सों रसको विस्तार करत हैं अनुभव करावत
हैं सो कहत हैं जा समय श्रीठाकुरजी आप वे
णुनाद करत हैं ते श्रीठाकुरजी चरणचिह्नि ता
हा समय के हैं और वृक्षके धुनि सुनिके श्रीयमुना
जी को प्रवाह उलटो चलत हैं और चंद्र जो है सूर्य
जो है तिनके रथ नाहीं चल सकत हैं और मुनी
नके ध्यान वांसुरी के शब्द सुनिके छूटत हैं गाय
प्रेम में विवस होय के श्रीठाकुरजी के सनमुख दे
खत हैं तिन ना हरवात हैं और गायन के ब
छरा सो ऊह धन नाहि पीवत हैं और जितने पक्षी
हैं सो मौन होय के वांसुरी को शब्द सुनत हैं मा
नो चित्र के से लिखे हैं और विमान ऊपर देवांग
ना पतिसहित हैं मोहित होय रहे हैं मृग जो
हैं सो अपनी चौकड़ी को भूलि जात हैं और व्रज
भक्त तो घर में रहि नाहि सकत हैं ऐसो वांसुरी

जबश्रीठाकुरजीविजावतहैं तबजाकोजेसोअ
धिकारहै तिनकोंतेसेंरसकोदानहोतहै जै
सेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुआपसमर्पणकोदान
जेजीवशरणआवतहै तिनकोंतत्कालहोतहै
औरउत्तमसिवैश्यशूद्र स्त्रीसवनकोंदानक
रतहैं सोजिनकेहृदयमेंजेसोभावहै जेजेसो
अधिकारकेजीवहैं तिनकोंतितनोलीलाकोदा
नकरतहैं सोकाहेतें जोवडोपात्रहै तिनमें
वहुतरससमातहैं तातेंजोप्रकारकेपात्रहैं ति
नमेंतेसोईरसदानकरतहैं तहांअपनेप्रतिवि
वकोपकरिवेकेलीयेमेंयत्नकरतहैं सोजवप्रति
विवश्रीहस्तकमलमेंनाहींआवतहैं तवखिलखिले
हसतहैं सोहेंदुधरातआयेहैं सोदामजेसेंच
मकेहै तप्रकारपरमशोभायमानहै एसेजोश्रुद्ध
तयालकहै तिनमेंमनलागेहैं औरजाशेवकको
जोभावहै जाकोश्रीठाकुरजीमेंसख्यभावकोअभि
लाषहै ताकोसख्यहभावकोसिद्धहोतहै जेसेंश्री
दमाजीआदिजोसखाहैं तिनमोंनानाप्रकारके
ठाकमिलकेखातहैं नानाप्रकारखेलतहैं जोभा
वकोविंदस्वामिकोसिद्धभयो जेसेंसिद्धहै औ
रजाकोअधिकारशृंगाररसमेंहै ताको

हावतहै तेहु नानाप्रकारकी रसादिकलीलाहोत
है ताकोअनुभवहोय जैसें कुंभनदासकों सिंहभु
औश्रीगोवर्द्धननाथजीआपुविनायकलमेंहरहि
सकतनाहीं ऐसोअधिकारहोय ताकोश्रेय
रकोदानकरतहैं जाकोसर्वईश्वरभावमेंहै सो
श्रीठाकुरजीईश्वरहैं कोटिकोटिब्रह्मांडकेव्याप
कतैसेईहैं औरजाकोमनकछुलौकिकमेंलौकि
कसंबंधमेंहै ताकोलौकिकइत्यादिकखानपान
बहुसिद्धहैकरतहैं तातेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभु
आपजीवेंसबकोजैसोअधिकारहैताको ताही
प्रकारकोदानकरतहैं जैसेंश्रीठाकुरजीआपबाल
नाटककरिकेबालव्यवहार जाकोजैसोअधिकारदेखे
ताकोताहीप्रकारकोरसदानकरतहैं ऐसेंही
श्रीआचार्यजीमहाप्रभुआपुनामसमर्पणकरिके
जाजीवकोजैसोअधिकारहैताकोतैसोईअनु
भवकरावतहै तातेंजैसेंधर्मश्रीठाकुरजीमेंहै
तैसेसबधर्मश्रीआचार्यजीमहाप्रभुमेंहैं जैसे
श्रीनंदजीश्रीठाकुरजीकोदेखकेमोहितहैं
तैसेंहीइनरूपकोजनतेवेभवहै सोश्रीआचा
र्यजीकोदेखिकेप्रेमसोंमोहितहोतहैं औरश्री

अभक्ष नानाप्रकारकी सामिग्री भूषण वस्त्र समर्प
ण करावत हैं। सो श्री ठाकुरजी प्रेम सहित अंगीका
र करत हैं। तैसेंही श्री आचार्यजी महाप्रभुनकों जो
कछु भेट करत हैं। सो अंगीकार करके दिन प्रति भक्ति
संगक रत हैं अपने श्री हस्तकमलसों। सो ईहां
वैष्णवश्री आचार्यजी महाप्रभुनकों पधरायकों
परमप्रेम सों करिके स्नान करावत हैं। सो श्रीठा
कुरजी कों व्रज भक्त अपने घर में परम प्रेम सों प
धरावत हैं। तब नाना प्रकार की सामिग्री सों स
मर्पण करत हैं। ता पीछे नाना प्रकार के भूषण वस्त्र
पहिरावत हैं। ता पीछे मुख वारि आर्ति करि निछा
वर करत हैं। सो दिन परम भाग्य सों मानिके
मानत हैं। ता प्रकार कों गान करत हैं। तैसें ईहां
वैष्णव सब श्री आचार्यजी कों पधरावत हैं। तब ना
ना प्रकार की सामिग्री शेवा आदि शेवत हैं। नाना प्र
कार के आभूषण वस्त्र पहिरावत हैं। ता पाछें भो
ग धरकरिकें कीर्तन गान करत हैं। नाना प्रकार
के फूलन की माला पहिरावत हैं। ता पाछें तिलक
करिकें मुख धार के आरती करत हैं। सो देखिके वै
ष्णव सब अपनो जन्म सुफल करिकें मानत हैं। पर
मप्रेम में विवस होत हैं। सो काहेते जो एक तो श्री

आचार्यजी आपसमछंदाने परमसुंदर हैं श्री
हैसे श्रीगिरधरनाथजी त्रिभंगललित हैं दल
कमलसे विराजत हैं और श्रीठाकुरजी कों व
प्रकार की लीला संजोग रस विप्रयोग रस लिं
कों निज स्वरूप सों कीये हैं सो संजोग रस
रस रीतों देते हैं श्री आचार्यजी महाप्रभु नके चि
त्त प्रसंग करवावे हैं और श्रीगोकुल परके वल्लभ
लालके रिदेखवे हैं जिनके सबके मनमें परछा
ते हैं और श्री आचार्यजी आप परस्वरूपके
लोक देखे सो एक समय श्री आचार्यजी के देख
सेवक ते कछु हैमा सिंघानि कृष्णी तव संगरा ने
श्री आचार्यजी पासकथा जो आज संगर में क
छुक धोखा बात नहीं है तब श्री आचार्यजी ने श्री
ठाकुरजी सों विनती करी सो काछे रह
सो कोनरवे धरिके साथ सामान चाये सो कर्यो
सोतें सब पदार्थ सब सिद्ध करिके श्रीठाकुरजी को
भोगसमर्पे पुरे हु सों ने ते आप घर में श्री आचा
र्यजी सिंहासन बेकर्हे मनसुख दलते बरबमर
सो एकैसे सब पदार्थ के हरिवंश जी में पथ पर दुर
ये साथ पाठ सब ध्यान सब मधुर ते बमोह रहलासो ले
आये तब श्री आचार्यजी नेउनको भूलाय के
स्तोक पत्र न छुइ एल पाओ एकविसावासि याले ॥

अब ता पाछे दुसरे दिन श्री ठाकुर जी सों पूछे त
व श्री आचार्य जी आप भोजन कीयो ता पाछे श्री अक्का
जी भोजन कीयो। पाछे सब शेवक टहल आ वैष्ण
वन महाप्रशाद लीयो। ऐसे विराजत हैं। सो श्री आचा
र्य जी आप अपने वैष्णवन कों शिक्षा करत हैं। जो या
प्रकार सेवा में सावधान रहियो। ऐसे श्री आचार्य जी
आप श्री ठाकुर जी की शेवा करत हैं। सो दैवी जीवन
के ऊपर अनुग्रह करिवे के लीये। और श्री आचार्य
जी आप तो श्री पूर्ण पुरुषोत्तम हैं। सो प्रकार प्रथम
श्लोक में यह सिद्धांत बताया जो जैसे जैसे धर्म श्री ठा
कुर जी में हैं तैसे सर्व धर्म श्री आचार्य जी महाप्रभुन
में हैं। ताते श्री कृष्ण ही स्वरूप हैं जानि कें श्री आचा
र्य जी महाप्रभुन कों भजन करो। अब दूसरो श्लोक
कहत हैं जो १ श्लोक श्री भागवत प्रतिपद मणिवर
भावांशु भूषिता मूर्त्तिः। श्री वल्लभाभिधानस्तनो
तु निज दास्य सौभाग्यं॥२॥ याको अर्थ श्री भाग
वत के सो है भगवत्स्वरूप ही है सो कहत हैं जो श्री
ठाकुर जी आप ऐसें ब्रह्माण्ड विषें अपने स्वनामस्व
रूप करि कें व्यापि रहे हैं। श्री प्रभु जी बिना कोई पदा
र्थ हैं नाहीं। ताते श्री पूर्ण पुरुषोत्तम कहियत हैं ते
न ही श्री भागवत में सर्व वस्तु कों वर्णन हैं। प्रथम

८। श्रीनारायणजीके नाभि तेंतें कमल भयो तहां ब्रह्मा
प्रकट भये ब्रह्माते महत्तत्त्व प्रकट भये ब्रह्मतें सृ
ष्टी सर्व सृष्टिके पिता भये पांचो तत्त्व प्रकट
भये पृथ्वी जल वायु पावक आकाश तिनके
है सेरके रितें कालये ज्ञान वैराग्य तप योग वि
वेक धैर्य आश्रय सहन शील दैन्य ता पाछे
राक्षस शास्त्र आदिके प्रकट भये सो देवतान सों।
और असुरन सों सदा विरोध चल्यो आयो है जब
असुरन को जीत होत है तब एकल देवता भाजि
के आपने आपने लोक छोडि के पुरवत कदरा
में जाय के छिपत हैं तब पृथ्वी ऊपर श्रीठाकुर
जी आय प्रकट होयके असुरन के संघार करत हैं
देवतान को रक्षा करत हैं या प्रकार श्रीप्रभुजी को
प्रागट्य होत है फेर प्रलय तीन प्रकार की है सो हो
त है एक प्रथम सो भये सो कहत है तब प्रलय होत है
सो कहत है जो सृष्टि को कर्ता एक ब्रह्मा सो वर्ष १००
के होयके ता पाछे जब मरत हैं तब प्रलय होत है
एक महाप्रलय श्रीप्रभुजी करत हैं तामें जितने
देवलोक ब्रह्मलोक शिवलोक ब्रह्माण्ड सहित स
बको प्रलय होत है तब महापुरुष जो है सो संकर्ष
णी रूप सों अग्नि है ताको प्रकट करत हैं सो जो

स्थलोक भस्म है। यज्ञांत है। समुद्र है सो अपनी म
र्याद छोडत है। या प्रकार पृथ्वीमें ऊसुखिगल
थ अनेक भांति सो होत है। सो सब श्रीभागवतमें प्र
गट है सो जैसे श्रीठाकुरजीके भगवानतें ज्ञान होय यातें
से श्रीभागवतके सुनेतें या जीवकों ज्ञान होइ सो क
हतें जो। श्रीभागवतमें प्रभुनकी अवतारकी लीला है
चौबीस अवतारको वर्णन है। और श्रीभागवतमें
श्रीपूर्णपुरुषोत्तम जो श्रीकृष्णचंद्र सब अवतारनके
अवतारन तिनकी नानाप्रकारकी लीला है ताको
वर्णन है। सो जा जीवकों जैसो अधिकार होय ताको
तैसोई अनुभव होइ। सो कहतें जो श्रीभागवत मुख
शेषनागजी सदा कहत हैं शौनकादिक सुनत हैं। औ
र श्रीभागवत विदुर मैत्रेय परस्पर कहत हैं। और
श्रीभागवत ब्रह्मा कहत हैं नारदजी सुनत हैं। और
श्रीभागवत क्षीरसागरमें श्रीनारायणजी कहत हैं
तहां श्रीलक्ष्मीजी सुनत हैं। या रीतें श्रीभागवत या पृथ्वी
पर जीवनके उद्धारके नौका है। सो जो भागवत भ
गवत्स्वरूप है। ताकी टीका करिवेमें श्रीआचार्यजी
महाप्रभु आप श्रीपूर्णपुरुषोत्तम हैं। सो कहतें जो
श्रीभागवत है सो कोई महापर्वत है। सो कहतें जो
पर्वतमें अनेक प्रकारके घास कूं होय। औरमें ए

हहोय। तैसें श्रीभागवतरूप श्रीपर्वत है। तामें सुवर्ण
कराह समान की कथा है। सो वृक्षादिक हैं। और श्री
ठाकुरजी की बाललीला रासादिक लीला है। सो मणि
है। सो पर्वत में जो जानत है। ताहि कों माणि मिले कुं
दारी सों खोद कें काढे। तैसें श्रीभागवत में पुरुषो
त्तम की लीला रत्न रूपण है। ताकों श्रीआचार्यजी म
हाप्रभु आप जानत है। सो आप उद्धार करि कें श्रीसु
बोधिनीजी इत्यादि ग्रंथ प्रकट कीये। तामें नाना प्र
कार के भाव वर्णन कीये है। सो अपने सेवकन कुं
दान कीये हैं। और श्रीभागवत में जो मणि है सो ई
श्री भूषण श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के श्रीअंग अ
ग विषें परम शोभा देत है। और श्रीभागवत के सो
है मानों महा गंभीर कोई समुद्र है। तिन में तें मेघ
जल ल्याइ कें सगरी पृथ्वी कों पोषण करत हैं। तामें
श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप मेघ रूप होय कें श्रीभा
गवत में श्रीपुरुषोत्तम जो कोई अमृत ताकों ग्रहण क
रत हैं। अपने सेवकन ऊपर और श्रीभागवत रूप
जो क्षार सागर रहे ताकें आप सामर्थ हैं। जैसें क्षी
र सागर कों मंदराचल पर्वत धरि कें देवता और
राक्षस मिलि कें मथन कीये हैं। तासमय मंदरा
चल पाताल कों जाय वेल्यो। तब श्रीठाकुरजी आ

कृष्णस्वरूप गिरिकों मंदराचलकों पीठ ऊपर ली
ये तब तीस्यागरकों मथन भयो। तब तामें तें चौद
ह रत्न नीकसे हो। तेसें ही श्रीभागवत है सो क्षीर
समुद्र है। ताको श्रीआचार्यजी आप मथन करिके
तामें सों ऊदह और रत्न है तो भगवतलीलारूप
अमृत ताको निकासे सो ऊहां समुद्र मथिके तें नि
कासे। सो उर और देवता तिनको श्रीठाकुरजीने
दियो। और अमृतकुं देवतानकों पान करायो। औ
र जो आप हृदयकमल में राखे हो। सो रत्नीताराक
नको पान करायो। तेसें ही इहां श्रीआचार्यजी
महाप्रभु आप श्रीभागवतरूपी समुद्रको मथि
कै पुरुषोत्तम स्वरूप रत्न निकारो। सो अपने सेव
कनकों अनुभव कराये हैं। और कर्मजड रहे ति
नकों कर्म बताये हैं। सो काहे तें जो ऊनकों पुरुषोत्त
मकी लीलाको अधिकार ना हो। तातें कर्मजड जे
हे तिनकों सोई दिने हैं। जैसें कहां राक्षसनमें
वारुणी दिने हैं। तैसें ईहां कर्मजडकों सो ई दिने है
और कहुं थी लक्ष्मीजीकों आप राखे हैं। तैसें इहां
श्री आचार्य महाप्रभु सब अवतारकी लीला श्री
ड के श्रीकृष्ण जो पूर्णपुरुषोत्तम हैं तिनकी लीला
के नाना प्रकारके भाव हैं तिनको

हुहेंलनेहैं श्रेरुरं हुंम गपनमे।हेमुत्तम
हरिद्रे ब्रह्मरहेनमेरिहे।हेमेहाइहमवुध
हपथ रिके[illegible]वपदेशमनपुत्रकोमसुद
हत्तरहजावे।[illegible]रदेसनइतेशो[illegible]
नहपुरुदेहैं श्रीप्रहबोतम[illegible]वितैगवस
हिहमझनसरहैहो।तिनकेश्रेत्नावपत्रा[illegible]
[illegible]पहतुम[illegible]लायहो।[illegible]सकेपतकर
नहहे।[illegible]हमे[illegible]सरपक्षेदेरिके।
[illegible]महुरेहनीद्रहैरेमेह[illegible]प्रमपहेतेसेहे
रहे।श्री[illegible]वपनामदुम्हनकोदेखिकेवहेवहे
डेनमपावदेहे।ओमनमेकौपावतहेतहे
देहुवबहेवदेहे[illegible]रिकेश्रीसावपत्र।मेंश्रव
नहैं।[illegible]वपर्कश्रप्रद्वदहुद्वेदेरिकेम
हतको।मपावहेवेसेउनकरतेहो।पहेहुतङ्ग
श्री[illegible]हे।श्रीवहुल्लदेखिकोहारहेलाव
नकहवहेहि।बोलाहुसोदेवीजोवहोपतेतरए
[illegible]नहोसे[illegible]वपेनलावहजोवनवे
नोहुहस्ससहहैहो।श्रीरदेवजानवहेश्रीहरोद
[illegible]मसहपुदवहनदेहहै।हेतेसेयोग्याव
[illegible]नपुत्रनपएश्रपनेवहनपुकरकदिकै
[illegible]हप्रस्नह[illegible]हुसहै।सो।श्रीभागवत

वृन्दावनगुणगाई इनकों प्रथम मन करिकें श्री पूर्णपुरु
षोत्तमकी लीलारूप जो अलौकिक आभूषण हैं जैसें
संयोगरस हैं के विप्रयोगरस इत्यादिक जो अलौ
किक आभूषण हैं तिनकरिकें श्री आचार्यजी मह
प्रभु आप परम शोभायमान हैं जातैं वकों श्री पूर्णपु
रुषोत्तमके [illegible] गानीवेकी इच्छा है यासों
श्री आचार्यजी महाप्रभुनके शरण आपकों श्री आचा
र्यजी को अहर्निश स्मरण करत हैं तिनकों श्री आ
चार्यजी आप दान करत हैं सो कहा है जो श्री पूर्णपुरु
षोत्तमके लीलाके पति श्री आचार्यजी आप हैं सो जब
ज्यकों दान करें तब लीलाको भेद जानें नाहि तो न जा
नें ताते वैष्णव है जो तुमको श्री ठाकुरजी की लीला
को चाहनो होय तो तुम श्री आचार्यजी के चरणकम
लको स्मरण करो और श्री आचार्यजी आप कैसे हैं
मूर्तिवंत हैं ताको अर्थ यह जो मूर्तिक हियो स्वरू
पात्मक हैं यह जो स्वरूपात्मक किनको कहियो
ताको अर्थ जो सो कहत हैं जाको स्वरूप अलौकिक
है याको हृदयमें तथा मनमें तथा चित्तमें आवे
नाही है सो कहत हैं श्री आचार्यजी के स्वरूपको निरधा
र वेदादिक नाही करि सकत हैं ते नेति नेति कहि
के स्तुति करत हैं ऐसो अद्भुत स्वरूप अखंड

हैं । ये सदा ही एकरस रहत हैं । कोऊ विषय हा पूर्वरू-
प कों देन वेर पृथ्वीमें विस्तार होत हैं । तैसें श्रीआ-
चार्य को स्वरूप सदा एकरस ही रहत हैं । सृष्टि क-
र्ता हू श्रीआचार्यजी आप सृष्टि को संघार कर्ता हैं
श्रीआचार्यजी आप सदा एकरस हू हैं । त्यातें मृत्तिवृत्त
हैं । ऐसें श्रीआचार्यजी आप वल्लभ हैं । वल्लभ कहिए
जो सबन के आनंद दायक हैं । सर्व प्राणी मात्रके सृष्टि-
त कर्ता हैं । सो काहेतें जो परम कारुण्य हैं । परमदया-
ल हैं । यातें वल्लभ कहियत हैं । और प्राणीमात्र के पा-
लवैति हैं । सबन के पोषण करत हैं । और सब प्राणिमा-
त्र के हृदय के जानन हार हैं । यातें वल्लभ भए सो नाम श्री-
आचार्यजी को है । और स्त्री जो हैं शूद्र जो हैं तिन प-
र परम अनुग्रह करिकें उद्धार कीये हैं । सो काहेतें
जो वेदमें स्त्री को शूद्र को अधिकार नाही हैं । वेद क-
रिकें नाही है । ऐसें कृपाल श्रीआचार्यजी आप पर-
मदयाल श्रीप्रभुजी आप हैं । जो ऐसे स्त्री शूद्र तिन
को ऊपर परम अनुग्रह करिकें आत्म समर्पण देय
कें इनको उद्धार करत हैं । तातें ऐसो कार्य काहु सों न
भयो है । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप करें । यातें
वल्लभ कहियत हैं । और श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप
श्रीठाकुरजी को अत्यंत करिकें प्रिय हैं प्राणप्रिय हैं

प्रमवल्लभ है।। जिन विना श्री ठाकुरजी आप एक
क्षणहूं रहि न सकत नाही है।। परम प्रिय हैं याता
सों वल्लभ कहियत हैं।। तो श्री ठाकुरजी कों श्री आचा
र्यजी आप ऐसे प्रिय हैं जो एक क्षण हू श्रीठाकुरजी
श्री आचार्यजी विना रहि सकत नाही हैं।। ताते वल्ल
भ ऐसो नाम है।। और वल्लभ कहिये जो जिनकों
श्री ठाकुरजी की लीला है सो जिनकों परम वल्लभ
ऐसो नाम परम प्रिय हैं।। ताते श्री ठाकुरजी की रासादि
क जो लीला परम उत्तम तें उत्तम।। और जो शृंगार र
स है।। सो जिनकों परम वल्लभ है।। नाम परमप्रिय
है।। ता हार स जिनकों चित्त मन लेय लान होय पर
हो है।। ता विना एक क्षण हूं रहि न सकत न ही है।। सो का
हे तें जो सर्व रसन में शृंगार रस श्रेष्ठ है।। जहां श्रीठाकु
रजी और श्री स्वामिनीजी नाना प्रकार की लीला करत
हैं सो श्री आचार्यजी कों अत्यंत वल्लभ है।। ताते वल्ल
भ कहियत है।। और व्रज विषें जो श्री गोकुल है श्री
गोवर्द्धन है।। सो जिनकों परम प्रिय हैं।। सो काहे तें जो
श्री ठाकुरजी आपकी नित्य लीला होत है।। श्री गोकुल में
बाललीला प्रगट है।। रासादिक लीला गोप्य है।। और श्री
गोवर्द्धन जो है जहां निज वृंदावन है।। तहां रासादिक
लीला प्रकट है।। और बाललीला गोप्य है।। सो श्री गोकु

संमेद्रवंशवजीवलेमायाकृत्नंसचितप्रांत
लवीसांनर ... स्वरूपसौंचयंसो
महाप्रभुजैसेहैं मायावाद रूपजोकोहिमर
अंधकारताकोविदारनकरताहैं नामदरगं
रतहैं जैसेसूर्यरोगहरहोय तहनहरोग
करिवे नवसमरे अंधकारहरहोय दर्श
जैसेसूर्यकेउदयभयेहपृथ्वीकेअंधकार
सनाशहोत है तैसेहैं मत्तुमरनजोकोहैं
मायावादरूपअंधकारप्रगटभयेहें सोकरतेजे
जीवनकोपरमभोहउपजायवेदपुराणकेअ
खिलअर्थविरुपलेकरेहें दसमोवेदयाकोअ
शीव्रतजीवनकोकरापजनेषयरहेजीवनहिं
वहिमुखहोइ औरशिवादिकतोफलकोप
ताकिरूपवेकोयेहैं एसेजीवनकेतन्जनाश
करिवाये ता हेसर्वजीवमायावादकेभरमतें
होइ वेदलौकिकह्याचरणकर्यो तैसैंघोर
अरजोआपविचारेजोब्रह्मथोउपरमायाया
वेरूपप्रवर्तभयेहैं ताकरकेदैवीजीवदुरूम
यावादकेभ्रममेंहोयरहे हैं सोकाढ़तेजोदैवी
जीवनहकोमेरेदूरजोहें इतआश्चर्यश्रीठाकुर
जीकेहेतनाहेहैं याप्रकारश्रीठाकुरजीआप

मनमेंविचारकें श्रीआचार्यमहाप्रभुनकों आज्ञा
दीयो। जोतुम पृथ्वीपर प्रगट होवो। मायावादको
खंडनकरो। ब्रह्मवादकोस्थापनकरो। जेदैवीजी
वहैं तिनकोंशरणलेकें ऊनकेमनकेनानाप्र
कारकेसंदेह हैं। तिनकोंदूरिकरो। औरजोदैवी
जीवहै तिनकेनानाप्रकारकेमनोरथअंगीकार
करो। तबदैवीजीवनकों मेरीप्राप्ति होय। तातें
पृथ्वीऊपरपधारो। ईहकार्य है। सोतुमारे बिना
औरकाहूसों सिद्धहोयगो नाहीं। तातें तुमहीयह
कार्यकरिवेमें सामर्थ्य हो। याप्रकारश्रीठाकुर
जी श्रीआचार्यजीकों जीवनऊपर परमदयाआई
सोकहते। जो श्रीआचार्यजी आप परमदयाल
हो। आपने जेदैवीजीवहैं। तिनकोदुःखरंचकहू
देखसकतनाहीं। तातें श्रीआचार्यजी आपपृ
थ्वीऊपर प्रकटभये तबपृथ्वीपरिक्रमाकेमि
सकरिकें पधारे। तहां कृष्णदेवराजाकेंनें माया
वादीकोंझगडोहुतो। तहां वैष्णवमार्गकेवडेवडे
महंत हारेहुते। तासमय श्रीआचार्यजीमहा
प्रभुआपपधारे। तबसगरीसभादेखिकेंचुरत
होऊर ठाढीभई। सोमानोपरम ये
ससेपधारे। सोकृष्णदेवराजाने श्री

सो बीनती कीनी जो महाराज मायावाद अन्धकु
दिन पृथ्वी पर है है ताको आप निवारण
कीजिये तब श्री आचार्यजी आप पच्छनेके वेद पुरा
णको देखि लेके मायावाद रु उनको ये तब श्री
आचार्यजी महाप्रभुनको ऐसो स्थान को प्रिय
प्राप्त को इक दिन में पृथ्वी परिक्रमा करत श्री
आचार्यजी आप फेरो पधारे तहां अनेक मायावा
दिन सु वाद के रिवे को आवते तब श्री आचार्यजी
को सेवक दामोदरदास प्रसाद लेवे को आते तहु ता
इ सेवक सब वैस्नव सबकोऊ सुनलेते तब श्री
आचार्यजी आप विचार के पत्रावलंबन ग्रंथको
ये सो पाछे जहां सब वाद विवाद स्थर न्यायजीके द
रवे को निल आवते तहां श्री आचार्यजी आपप
त्रावलंबन ग्रंथको आरोपन कर्‍यो जहां सब वाद
आयके दर्सन करते तहां पत्रावलंबन ग्रंथको
देखके सब वादको निरूपण करिके निरुत्त
र भये तब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके इत
कोइ वाद करिवेको आवते नाहीं या प्रकार मा
या वादको खंडन भयो ब्रह्मवाद को निरूपण
भयो तब जितने वैस्नव सेवक हुते तिन सबन
को किरपा करिके दीने तब दैवी जीव जे है सो

श्रीआचार्यजी के शरण आये कों परम सुख पा
ये परम आनंद भयो । सो काहेतें जो पहिले मा
यावाद जो कोई तिमिर [illegible]
[illegible] तातें ह
[illegible]य करिकें श्रीठाकुरजी को भजन होतो ना
हीं । तातें जब श्रीआचार्यजी आप परम तेजवान
सूर्य प्रगट भये । तब मायावाद रूप जो अंधका
र ताको नाश भयो । तब वैष्णव सेवक को संदे
ह रूप जो तिमिर हतो । ताको नाश भयो । तातें
दृढ आश्रय करिकें एक श्रीठाकुरजी को भजन
करन लागे । सो काहेतें जो जहां ताईं मन में सं
देह रहे तहां ताईं फल की प्राप्ति होइ नहीं । याही
तें भगवद् गीता में अर्जुन प्रति श्रीभगवान
कहे है जो । संशय आत्मा विनश्यति । जहां
जीव को संशय भयो तहां या जीव को काहू फ
ल की सिद्धि नाहीं । सो जहां दृढ आश्रय अनन्यता
होय । तहां सर्व फल की सिद्धि होय चुकी । तातें
जब सब सेवकन को संदेह निवर्ति भयो तब अ
नन्यता दृढ भई । तब श्रीआचार्यजी को भजन
करन लागे । ता पाछें श्रीआचार्यजी आप वाद
को दूरि करिकें भगवत् सेवा प्र

नि सों प्रकट कीये हैं जामें साक्षात पुरुषो
त्तम नाना प्रकार को सामिग्री ओरोगें जैसें
पूरन मद रत्न मन रूप जो श्री बालक को श्री आत
ये जो मन प्रभु श्री पुकारि के सगरे सेवकनको
दिखायें हैं जैसा प्रकार पुष्टिमार्ग को आ
चरण कियो सो श्री गोवर्द्धननाथजी को स्वा
श्री आचार्यजी आप प्रगट किये॥ यह जन्मउत्स
व लाभ मौंने लैके जो कछू है तिन सबनको प्र
गट भयो। सो कहत हैं जो यह दैवी जीवन के प्रका
र के जीव बहुत हते। जब श्री आचार्यजी आप प्र
गट कीये तब पुष्टि वर्ष दिन के नाना प्रकार के कु
ल सब हैं तिनको प्रगट कीये सबहु जैसरि तहोय
तहु तैसो ईश्वर गाम्भर तो श्री आचार्यजी आप श्री
गोवर्द्धननाथजी को धरावत हैं सो तकाल में श
दरु आर। के नाना प्रकार के वस्त्र। और रु
ति कि आभूषण जरी आदि सब रिति सों शृंगा
र धरावत हैं। आपने श्री गोद धरत हैं। और व
से ही। सो नाना प्रकार सो गुलाल अबीर चो
वा स्वर्दित इत्र किलो भूषण है। तिन सदि व रंग
ल्यावत हैं। ता पाछें श्रवणक ल में पद्य। परमुख रवे
म पिछो गण मतो को भंग रकरत हैं श्री गो

मेंनानाप्रकारकी सुगंध सहित। और अरगजा
को लेपन करत हैं। ओ तिन के आभरण धरावत
हैं। और अपने शेषकन को वेश्यव को शोभा करा
ओं। सब सिखावत है। सो शोभा कैसी है। श्रीगो
कुलजो है तिनके पति जो श्रीठाकुरजी तिनको सा
क्षात दर्शन नासों साक्षात संबंध होत है। तहां ताण
ण घान कओर हो। श्री राप्रगटहोत है। सो कहत है जो
और मार्ग हैं। ज्ञानमार्ग। योगमार्ग। कर्ममार्ग उपा
सनामार्ग। तामें साधन न्यारे फल न्यारे हैं। सो क
हत हैं। जब साधन करै तब कोई क कब हू फल होय
जैसें ज्ञानमार्ग है। तामें मन को रोक हमेश के विष
यादि कमें मन न जाय सगरी इन्द्रिन को निपलक
रनो है। सो कहुते जो जहां तांई इन्द्री शिथिलता
न होय तहां ताई ज्ञान को साधन नाहीं। योगआव
ता पाछे स्वासा रोकि के प्राण को ब्रह्माण्ड चढावनो
सो जब सीद्ध होय तब कहूं फल को देह। योगीज
न जोग साधत है। आत्मा को ध्यावत हैं। अनेक प्रका
र सों तपश्चर्या वे साधन करत हैं। तब कबहूं
कका हू को पायो है। हु तहां कर्म में नाना प्रकार
के कर्म समय करनो। यज्ञादिक कर्म में जो होय
सो करत हैं। तहां अनेक प्रकार को सा

२८ वाहीये ओषधीप्रगट वाहीये और कहूं
हीये यज्ञदेवता जो श्रीभगवान हैं तिनके ना
नाप्रकार के मंत्र हैं और ब्रह्मादिक देवता को भ
ग हैं सो न्यारे न्यारे धरत हैं तामें सब देवतान
को मंत्र सहित वलावत हैं जो भूलेनाहारं
च कहूं भूले तो कीयो करायो सब नष्ट होय जोय
सोकाहेतें जो यज्ञ नष्ट भयेतें ऋत्व ये भ्रष्ट होय
जाय तातें योगमार्ग कर्ममार्ग न वकाहूको सि
द्ध नाहीं हैं उपासना मार्ग में नाना प्रकार के दे
वता हैं तिनकी उपासना जीव करत हैं तामें
जब कहूं निर्विघ्नता सो उपासना सिद्ध होय तब
तब कहूं फल की प्राप्ति होय सो ऊ फल लौकिक हैं
तातें और जो मार्ग हैं तिनको साधन न्यारो फल
न्यारो और फल है सब लौकिक सो ऊ कलिके
दोष करिकें कहूं को सिद्ध होत देखनाहीं तातें
श्री आचार्यजी महाप्रभु आप श्री पुरुषोत्त
म की जो लीला तिनहीं का फल सो श्री ठाकुरजी
तिनकी सेवा फल हैं में श्री ठाकुरजी की सेवा ते
सो फलरूप पुष्टिमार्ग हैं सो श्री आचार्यजी मह
प्रभुन ने प्रगट कीये हैं जामें कछु विघ्न भल

हेयके सो श्री ठाकुरजी प्रशन्न होयके दान न करें
फल देवे में असमर्थ नकरो सो कहा हें तें जो श्री ठा
कुर आप परमदयाल हैं। जो वकार वकहे जोश
वाहे ताको वकुत ठाकुर के मानत हैं। ता तें साध
नकी और देखतना हीं हैं। श्री आचार्यजी के कान
तें जो वैष्णव सामि श्री गोगधरत हैं। ताको अंगी
कार करत हैं। प्रशन्न होयके अरोगत हैं। ता ते
साधन है फलरूप हैं। और श्री आचार्यजी आप पु
ष्टिमार्ग प्रकट कीये हैं। श्री गोकुलके नाथ जो पूर्ण
पुरुषोत्तम तिनको सर्वथा सादात होत हैं। ता
पाछें श्री ठाकुरजी की जो लीला नानाप्रकारकी
बाललीला प्रौढलीला कुमारलीला राजलीला
इत्यादिकलीला के भेद जे हैं। तिनके भावना ना
प्रकारके संयोगरस। विप्रयोगरस ये दोऊ रस
को अनुभव होत हैं। और वैष्णव जो हें दैवीजीव
हैं। तिनके नानाप्रकारके पापकरिकें श्री ठाकुर
जीके चरणारविंद में प्राप्त होय। तिनमें जो प्रति
बंध हैं। सो श्री आचार्यजी आप करुणा करिकें स
र्व सेवकनको शेवा करवायकें प्रतिबंध दूर की
ये हैं। और जो आसुरीजीव हैं तिनको कामक्रो
धमदामात्सर्य षटऊपाधकरके श्री आ

श्री महाप्रभुन के स्वरूप ज्ञान तो नाहीं है ताते
उल्लटे श्री आचार्यजी के महात्म्य देखि सुनके
मोह कों पावत हैं सो काहे तें जैसें सूर्य प्रकट हो
त है परंतु जे आंधरे हैं तिनकों रात्रि दिन सब
बराबर है उनकों सूर्य को उजियारो कछु सूझत
नाही है तैसें ही श्री आचार्यजी महाप्रभु आप
को ईश्वरपन सगुन को प्रकाश जगत में दर्शन दे
त हैं अपनो प्रताप महात्म्य हू जनावत है परंतु
आसुरी जीव जो है सो विवेक ज्ञान करिके आंध
रे हैं तिनको कछु सूझत नाही है ताते श्री आचा
र्यजी के स्वरूप देखत है परंतु ज्ञान होत नाहीं है उ
ल्लटे मोह ही होत हैं सो काहे तें जो वे आसुरी
जीव हैं ताते उनकों ज्ञान होत नाही है और जे
वैष्णव हैं सो श्री आचार्यजी को पूर्ण पुरुषोत्तम ही
जानत हैं उनकों वैसे ही दर्शन प्रभु देत हैं और
श्री आचार्यजी आप श्रीठाकुरजी के मुखारविंद ल
प जो अग्नि है ता रूप श्री आचार्यजी आप हैं तैसेंई
श्री आचार्यजी महाप्रभुन को तापात्मक प्रेम मा
र्ग है ताते या मार्ग में विरहताई टाल है जहां लों
हृत्ताप रूप जो श्रीठाकुरजी को विरह है जो मोको
कबै मिलें सो जहां तांई ए सो ताप नाही है तहां

तां पुष्टि मार्ग को फल कों पावें नहीं ॥ और जहां
ताप याके हृदय में भयो तहां लालास हित श्रीगोव
र्द्धननाथजी आप अपनों दर्शन देहि ॥ जहां ताहि
याको खितर खान पान मेल गयो होत है ताई यहजी
वको शरीर को सुख ही चाहत हैं ॥ याते वैष्णव
जे हों तिनको महाप्रशाद लेनो सो श्रीप्रभुजी
को कृपा रूप जानिकै लेनो ॥ अपने शरीर को अप
ना ही जाननो ॥ सो काहेते जो शरीर को भग
विचार तो विषयाशक्त प्रगट होय हैं ॥ और
महाप्रशाद कृपा रूप जानिके लेय तो श्रीठाकुरजी
के भजन में मन लगे ॥ और वस्तु श्रीठाकुरजीके
महाप्रशादी करिके पहिरनो ॥ सो काहेतें जो ॥ दा
सको येही धर्म है ॥ जो उत्तम वस्तु होय सो प्रभुनको
विनियोग करे प्रशादी हीतें निर्वाह करनो ॥ सो
काहेतें जो ॥ एक समय श्रीनारदजी वैकुंठलोक
में श्रीभगवान को दर्शन करिवेको गये ॥ सो श्री
ठाकुरजीकी बहुत ही स्तुति करी ॥ तब श्रीठाकुरजी प्र
सन्न होयकें श्रीनारदजीसों कहे ॥ जो नारद आग
तुमकों महाप्रशाद देत हैं ॥ सो श्रीठाकुरजीने
नारदकों श्रीमहाप्रशादको किनका मात्र दीयो
सो श्रीनारदजी लेके महाप्रशादको दण्डवत करि

६०
१८

कैवकुंठ हीप्रशान्नभये। सो आनंद में देहानु
भावरहीनहीं। तापाछे श्रीनारदजी अपनेमन
विचारे जो महाप्रशाद अकेलेमें कैसेलेहुं कु
ई वैस्नवसों मिलिकेलेऊं। तव हृदय[illegible]रे
महाप्रशादके पात्र श्रीमहादेवजी हैं। तिनकों
मिलकेंलीजीये। ऐसो विचारिकें श्रीठाकुरजी
कोंदंडवत करिकें वैकुंठतें कैलाशमें जाहां श्री
महादेवजीहुते तहां आये। सो श्रीमहादेवजीकोंना
रजीने वहुतहीं सन्मान कीयो। पूछे जो श्रीनारद
जी तुम कहांतें आये। श्रीठाकुरजी आप प्रशन्नहो
यकें महाप्रशाद दये हैं। सो में हृदयमें विचारे हैं
जो महाप्रशाद अकेले कैसेलेऊं। महाप्रशाद वै
स्नव होय तिनसों मिलकेलेऊं। सो तुम वैस्नव हो
तातें महाप्रशाद लेकें आये हैं। इतनो सुनतहीं
श्रीमहादेवजी कों महाप्रशादकी महिमा सु
धि आई। सो महाप्रशादकों दंडवत करिकें तापा
छें तांडव नृत्य श्रीमहादेवजी करन लागे।
श्रीनारदजी हू लेकें आनंदसों गान करनलागे
सो कोई दीनाताई आनंदमें नृत्य करत भये।
तापाछें शांत होयकें परम आनंदमें श्रीमहा
देवजी और श्रीपारवतीजी वैठे। तव श्रीपारवु

तीनें श्रीमहादेवजी सों कह्यो ॥ जो महाप्रशाद
में त्रैलोक को गुण है ॥ जामें जो सो आनंद है ॥ तब
श्रीमहादेवजी नें श्रीपारवती सों कह्यो ॥ जो हे
पारवती महाप्रशाद को महिमा को वर्णन और दे
वता जितने हैं सो कहिवे को सामर्थ नाहीं है ॥ ऐसे
श्रीमहाप्रशाद को महिमा है ॥ सो काहेतें जो महा
प्रशाद लेत हैं ॥ तिनको कोटि जन्म को अंतरा
य है ॥ पर श्रीप्रभुजीजी के मिलवे को ॥ सो सब दू
र होत है ॥ और दूसको यही धर्म है ॥ जो महाप्र
शाद होत तें निर्वाह करे ॥ और अन्य प्रशाद रखायतो
श्वान के विष्ठा समान है ॥ सो काहेतें जो ॥ ता दशा होइ
के श्रीठाकुरजी आपको विना दोरखायतो याको द
शपनो छूट जाय ॥ सो काहेतें जो महाप्रशाद स
मान या जीवकों उद्धार को कारन नाहीं है ॥ महाप्र
शाद को महिमा तें बिना साधन हीं यह संसार
समुद्र को तरि जात है ॥ तातें महाप्रशाद को म
हिमा को पार नाहीं है ॥ और एक समय श्री आ
चार्यजी महाप्रभु आप पुरुषोत्तम क्षेत्र पधारे ॥
तहां श्रीजगन्नाथजी के दर्शन कीये ॥ सो एक प्रह

पृ०॥
८०॥

रदिन आयो हुतो तासमय एक पंडित आय के
श्रीमहाप्रशाद श्री आचार्यजी को दीयो सो श्री आ
चार्यजी महाप्रभु प्रशाद हाथ में लीयो। तादिन ए
कादशी हुती सो श्री आचार्यजी आप महाप्रशा
द हस्तकमल में लेकर को प्रणाम वेद शास्त्र
महिमा कहत है तो श्लोक श्री आचार्यजी महाप्र
भु आप कहन लागे सो महाप्रशाद को महिमा क
हत कहत सगरे दिन वीत्यो सगरी रात्रवी
तीत भई तापाछे प्रातकाल भयो तब श्रीम
हाप्रशाद श्री आचार्यजी आप लीयो कछु देह
ध्यास शरीर व्यवधान रखी सो काहेते जो
श्री आचार्यजी आप श्री पूर्ण पुरुषोत्तम हैं सो का
शी हू राखी सो महाप्रशाद को महात्म्य हू प्रग
ट कीयो और शरीर के विद्यमाने नित्यक के क
र्म हू जनायो सो काहेते जो श्री आचार्यजी आ
पको एकादशी की मर्यादा न राखते तो एका
दशी को व्रत पृथ्वी ऊपर कोऊ करतो नाही
और महाप्रशाद की महिमा ऐसी न राखते
तो महाप्रशाद को माहात्म्य पृथ्वी ऊपर प्रक
को न करतो ताते श्री आचार्यजी महाप्रभु राखे

नव मुक्तिकाविरचितो मुदाविभ्रतांमनो
ज्ञकरयोः प्रियेसुमुखिराधिकावल्लभप्रिया
त्तिपृथग्भेदयो विद्धतीसमां दोलनं अ
गअंतद नंदरयामकाचकेसुंदरकंकणशो
भियतहै। तापाछेंसुवर्णकेपाटमेंप्रोये जो
डे सुवर्णकेफूलनायांचितोंकहं। औरचंदनं
दनयेमोतीनकरिकैरचेसुचनाकायहै
हृदयसंयुक्तधरतहैं। मनकोरुचेएसेदो
उहाथविषेधरतनाई हौ प्रियेसुमुखीरा
धिकावल्लभजोश्रीकृष्णचंद्रतिनकीप्रिया
सोआस्वंतसोभतहैं। एसेकंकणकोधरतस
म्यकुचाहडोलावतडोलाकाचलावोसोतापा
छेंसुवर्णकेफंकणताकेआगेंचांदिजो
स्यामपाटकेफूंदनाशोभितहैं। चंदनंदन
येमोतीकरचेआगेमोतीकेगजरासोंहर
दसंयुक्तमनकोयोग्यहोयहैं। एसेदोउहा
थविषेधरतनाईहौ प्रियेसुमुखीसोश्री
धिकावल्लभजोश्रीकृष्ण
भास्वंतशोभमाने ।

॥ थ ओर कैं डोला बनत हैं ॥ ६२ ॥ श्लो तत: पश्चा
च्चामीकरसुघटितौ कनकुवलितौ कटवल
या ॥ तत: सा गौरांगी मरकतमया चांगदवौ
स्वाङ्कारस्मन्मानसनयनपाशी विवधस्
येचेत: कासां प्रसभमहरन्मांवुजमुखि
॥ ६३ ॥ अर्थ तदनंतर कंकनके पाछे सु
वर्नकी सुंदर घटित लेके हाथका मनोहर
चूडा ॥ तदनंतर जो वह गौरंगी श्यांग मरक
तमनिमय श्रेष्ठ श्यांग विरवे जो बाजूवंद वि
जावटश्यापुनेटके बांहविसें धरत भई है
सो यह हे वहांगद नहोया ॥ यह श्रोत: करने
के और नेत्रकुं पासका सी धरा है ॥ ये सब वा
न पद ॥ हे कमलमुखी ये सो कौन यह कौन
को चित जो प्रसभ कहे तत्वें चकरिकैं न ह
रन कायै है ॥ हे कमलमुखी ॥ ६३ ॥ श्लो तत: पु
लीषु दशसु विचित्रा मणिनिर्मिता: ॥ न
खांशुभूषिताश्चक्रे मुद्रिका: प्रियवल्लभा
॥ ६४ ॥ टी तदनंतर हे दशो अंगुली वि
षे विविध विचित्र मणिकर निर्मित सोनर

केजा ... तुमहोंए जाकरो। तबश्री आचार्यजीने कह्यो अपने माता पिता सों जो फेरि के मांगयो मत्ति। तब इनने कह्यो जो हम फेर नाही मांगे गे तुम होंए जाकरो। तब आचार्यजी सब स्वरूप लेआये। श्री आचार्यजी महाप्रभुन कों लाय दीये। तब श्री आचार्यजी ने पंच एजाम तो श्रीगिरिधारीजी को स्वरूप को लेके आपने शरपधरा ये ताप छे चार स्वरूप कुत्ते मे एक शामलदेवा भवानी स्रयी तिनकों श्री गंगाजी मे पधरायवे लागे तब जो न्यारो स्वरूप सब बोले जो महाराज हम को तुम न मानोगे तो हम को केन मानोगो। तब श्री आचार्यजी ने कह्यो जो तुमको प्रस्थाव विवाहा रको कर्म में बुलावेगो। या प्रकार कह के उनको जलमें पधराये। श्री गिरधारीजी के स्वरूप को कुतो तिनको नाम श्री गोकुलनाथजी राखे। तिनकी शेवा पुष्टिमार्ग कीरीति सों करन लागे। एसी भान्ति सों श्री आचार्यजी आपने अपनो सो महात्म्य जगत मे प्रकट कीये। पुष्टिमार्ग जे हे तिनको प्रकाश कीये। आपने शेवक

नको पुष्टि मार्ग को फल ताको दीये ॥ ता ते श्री आ
चार्यजी महाप्रभु आप अलौकिक स्वरूप प्रग
ट है ॥ ते सोई पुष्ट मार्ग को अलौकिक स्वरूप
प्रगट है । पृथ्वी पर प्रकाश भयो है ॥ ताते दे
वीजीव है श्री आचार्यजी के शरण आय पुष्
टि मार्ग को फल है ता कौ पायके संतोष भये
या प्रकार तीन श्लोक को अर्थ निरूपण भयो है
अब चतुर्थ श्लोक को अर्थ ॥ श्लोक ॥ कृचित्यां
र्यं चेन्न निगम गतिः सापि यदि क्रियासा
सापि स्याद्यदि न हरि मार्गे परिचयः ॥ यदि
स्यात्सोपि श्री व्रजपतिरतिर्नेति निखि
लैर्गुणैरन्यः को वा विलसति विनावल्ल
भवरं ॥ ४ ॥ याको अर्थ ॥ श्री आचार्यजी म
हाप्रभुन को स्वरूप कैसो है ॥ काहू ते जान्यो
न जाइ सो काहू ते जो ॥ कैसो कु पंडित होउ नि
गम जो है वेद शास्त्र पुराण तिनहू के जानिवे
में चतुर है ओर संदेह निवर्तक है ॥ जगत में
वडी वडाई है ॥ ऐसे सो होउ वे तो पंडित है ॥ परं
तु सो ऊ श्री आचार्यजी के स्वरूप को ज्ञान वे में सा

मर्थ्य नाहीं है। काहेतें जो पंडितको अपने पंडिता
ईको बल होय तातें पंडित अंधकारके वस होय
रहे हैं। सो श्री आचार्यजी महाप्रभुनको स्वरूप
कों जानें नाहीं हैं। अपने योग तप कृत उगमें
मानि रहे हैं। तामें अभिमानरूपी जो मद है॥
तामें मतवारे होयकें श्री आचार्यजी आप पूर्ण पुरुषो
त्तम हैं तिनके स्वरूपको ग्यान नाहीं होत है। सो
काहेतें जो साधन जो है वेद तामें जो कर्म कहे हैं
नानाप्रकारको अग्निहोत्र यज्ञादिक हैं। तिनके
साधनमें लगे हैं। और वेदमें को सार जो है॥
निःसाधन होयके श्री पूर्णपुरुषोत्तमकों भज
न करनो। सो याप्रकारको अर्थ सिद्धांत है। ता
को ज्ञान वेमें अभिमान करिकें पंडितको बुद्
रही है। तातें ऐसो सिद्धांत जो विवेको सामर्थ्य
नाहीं है। तातें कलिके दोष करिकें उन पंडि
तनकी कोई कथा सिद्ध होई आवत नाहीं है
सो काहेतें जो यज्ञादिकनकों बहुत द्रव्य चा
हिये। जा जा भांतिकी यज्ञादिककी जो ओसा
मग्री सब वस्तु मिलें। तापाछे यज्ञ कर

देवतानको आवगाहनमंत्रकरिके देवतान
को मंत्रकरिके देवतानको बुलावत हैं तापा
छे आसन देत है। तापाछे न्यारे न्यारे भाग सर्व
देवतानको विकारत हैं सो देवताके क्रीयामें
रचक हूं भूलपरै तो वह देवता यज्ञको नाश हूं
करै। और यज्ञके करनवारेको भ्रष्ट करै ता
तें याकालके विषें यज्ञ हूं सिद्धि नाहीं होवत है
और होमादिक जो है तामें अग्निको कुंड करि
के नाना प्रकारकी होमकी सामिग्री है तिन
को जैसे वेदमें कह्यो है सो सबलके वेदरीति सों
घृत आदिके अग्निमें होमें तब हूं रंचक
हूं मंत्रमें तथा होमकी क्रियामें भूलै तो सगरो
कीयो करायो वृथा होय जाय और फलको ना
श होय तापाछे होम हूं को करनवारो खेद पा
वै सो कहे तें जो याकलियुगके दोष करिकें।
अग्निहोत्र हूं सिद्ध होय सकत नाहीं याप्रकार
पंडित नानाप्रकारकी क्रियामें मन लगायके
अभिमानवस होय श्रीठाकुरजीके स्वरूपको
ज्ञान सकत नाहीं है तातें श्री आचार्यजी॥

के स्वरूपको ज्ञान पंडितन न है को कहातें होइ
सो काहेतें जो॥ श्री आचार्य महाप्रभुनके स्वरू
पको ज्ञान तब होय जब श्री आचार्यजी आप
अनुग्रह करिकें अपुनो स्वरूप जनावें। तब
ही जान्यो जाइ। नातर तो कोटि कोटि साधन क
रो परंतु श्री आचार्यजीको स्वरूप जान्यो न जा
य॥ सो काहेतें जो॥ श्री आचार्यजी आप जब पृ
थ्वीपरिक्रमा तीन बार करी। तब नाना प्रका
रके पंडित बडे बडे ज्ञानी मायावादी॥ अने
क शास्त्रके जाननवारे। सो श्री आचार्यजीकों
मिले कृष्णदेवराजाकी सभामें। तहां श्री आ
चार्यजी आपसों चर्चा भई। तहां सब पंडित हा
रे। परंतु तहां श्री आचार्यजीके स्वरूपको ज्ञान
पंडितनकों न भयो॥ और सब शास्त्रके जान
नवारे पंडित काशीहूमें मिले तथा श्री जग
न्नाथरायजीमें मिले। और जहां तहां हू मि
ले। तिन सबकों श्री आचार्यजी आप निरुत्त
र कीये। परंतु तोहू श्री आचार्यजीके स्वरूप
को ज्ञान न भयो॥ सो काहेतें जो श्री आ

...स्वरूपकोज्ञान नहीं सकत हैं। को
है तें जो श्री आचार्यजी आप अपने स्वरूपको
अनुभव उनकों नाहीं जनावत हैं। कोहे जो
दैवी जीव हैं। ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र स्त्री इत्या
दिक पठेहोंय बिना पठे हूं होउ जो श्री महाप्रभु
के शरण आवत है। तिनकों श्री आचार्यजी
पन्नाम समर्पण करवावत हैं। तिनकों तिनको
अपने स्वरूपको दर्शन देत हैं। तिनकों पुष्टिमा
र्गको फल जो श्री ठाकुरजी तिनकी नाना प्रकार
की लीलाको अनुभव श्री आचार्यजी आप
करावत हैं। तातें श्री आचार्यजीको स्वरूप श्री ठाकु
रजीको स्वरूप ताको अनुभव कहूं पटै तो।
चतुराई तें होत नाहीं। जब नि:साधन होय
कें दीनता करिकें बहुत ही प्रार्थना करिकें श्री
आचार्यजी के शरण आवे। तब श्री आचार्यजी
आप परमदयाल हैं। करुणानिधान हैं। तातें
ताकें परिपूर्ण पोतामहें। सोजो जीवकों अनुभव क
रावें। ताको फल सिद्ध होय। तातें पुष्टिमार्ग फ
ल है। सो कृपासाध्य है। साधनसाध्य नाहीं हैं।

ओरश्री आचार्यजी महाप्रभु आपके से हैं। नि
गम जो है वेद ताही के हृदय को जानत हैं। औ
र श्री आचार्यजी आप हू वेद के कर्म द्वौ सो कर
त हैं। और मन पूर्वक श्री गोवर्द्धननाथजी की
शेवा हू करत हैं। त्रिकाल संध्या हू साधत
हैं पुत्रादिक हो मदन मयंक रचत हैं। सोको
न भावत सो करत हैं। जो प्रथम श्री ठाकुर
जी की शेवा जो है। तिन सो पहुचके करत हैं
तो तें श्री ठाकुरजी की शेवा तो आवश्यक क
रनी। ता में अवकाश होय तो कर्मादिक कर
नो। सो कहत हैं। जो आप हू आश्रय कुल में अ
वतार लीये हैं। ताते मर्यादा राखवे के लीये वे
द के कर्म करत हैं। और श्री ठाकुरजी की शेवा सो
तो मन पूर्वक परम प्रीत सो करत हैं। और अपने
शेवकन को हू यही शिक्षा करत हैं। जो तुम पु
र्णपुरुषोत्तम की शेवा करें। ताते श्री आचार्यजी
आप तो पूर्णपुरुषोत्तम हैं। जो आप वेद की मर्या
द न राखते तो। और कौन राखते। और कोऊ
वेद के कर्म करें न्याहू है। ताके लीये श्री अ

आपपूर्णपुरुषोत्तम हैं॥ तिनके मर्यादा ति
वे केलीयेकरत हैं॥ ओर मन पूर्वक श्रीगोवर्द्धन
नाथजी की शेवाकरत हीं है॥ ओ व्रिजपति ऐसे
श्रीकृष्ण जिनको देखि के कोटि कोटकामदेव
कोटि कोटि रति लज्जाको पावत है॥ ओर जि
नके स्वरूपको ज्ञानवेदादिकनको अगम्य है
वेद हूने तिन तिक है॥ श्री आचार्यजी के गुण
है तिनको गान करें है॥ ... मनकरिके मुख्य
भूद करिकें श्री आचार्यजी के गुण है तिनके
कोई पार न ही पायो ते सेंद्दी॥ श्री पूर्णपुरुषोत्तम
जो व्रिजके पति तिन हूं को स्वरूपके कोई ज्ञानत
ना है॥ सो कारे ते॥ जो श्री ठाकुरजी है तिन
मे तो अनेक गुण है॥ ताकरिकें सजुगत है जिन
ने क गुण पृथ्वी ऊपर प्रकट है॥ सो सब श्री ठाकुरजी
मे प्रकट है॥ ओर श्री ठाकुरजी तो गुण करिके समु
वता पूर्ण है यर है है॥ इसे जो परते पर॥ श्री पूर्ण
पुरुषोत्तम है॥ तिनसों विलास य हजीव कैसो
चाहै तो॥ एक श्री आचार्यजी महाप्रभुनके चर
ण के आश्रय होये तव ही सिद्धि होये॥ सो का

हैसे। जो विना वल्लभ जो है सो वरनाम श्रीप
हैं। सो काहे। जो और हूं आचार्य नाम धराये हैं
लीये हैं। तिन सब आचार्य में श्री वल्लभाचार्यजी
आप श्रेष्ठ हैं। सो काहेते जो सब आचार्य के प
ति हैं। मायावाद कें कलीटें। पुष्टमार्ग के प्रकट
करता हैं। ऐसो प्रताप अपनो पृथ्वी ऊपर श्री
वल्लभाचार्यजी ने प्रकट कीयो। ऐसो कार्य काहू
सों न होय। ऐसो जो वल्लभाचार्यजी सब के पति
हैं तिन के चरणारविंद को आश्रय छोडकें श्री
पूर्णपुरुषोत्तम जो हैं श्रीजी के पति तिनसों विलास
कीयो चाहत हैं सो अन्यान करिकें मरत हैं सो
काहेतें जो। श्री आचार्यजी को आश्रय छोडिकें
श्री ठकुरजी के प्राप्त हैवेकों जतन करत हैं
और श्री ठकुरजी की प्राप्ति तिनकों नाहीं होत
हैं। काहेतें जो श्री पूर्णपुरुषोत्तम तो श्री आचा
र्यजी महाप्रभु हैं आप कृपा करिकें दान दें हि
तिनकों सिद्ध होय। और कों सिद्धि कबहूं न हो
य। कोट प्रकार के साधन करो परंतु फलकी।
प्राप्ति नहीं है। सो काहेतें जो सब के पति हैं श्रीआ

र्णपुरुषोत्तमस्वरूपजोश्रीआचार्यमहाप्रभुईन
केचरणारविंदकेआश्रयजाजीवकोसिद्धन
भयोहै ताकेजितनेकमनोरथहैं सोसबस्व
लीपरतहैं। काहेतेंजोजहांपूर्णश्रीपूर्णपुरु
षोत्तमतेंबहिर्मुखभयोहै तहांलौकिकपदा
र्थहै। अलौकिकपदार्थहैसोकछूसिद्धनाहि
हैंतहां। अरुजीवसंसारसमुद्रहै तामेंनाना
प्रकारकेदुःखहीपावतहै सोकाहेतेंजो
श्रीप्रभुनकेचरणारविंदकोआश्रयउनजी
वनकोनाहिहै। याहीतेंभगवाननेभगवद्
तामेंकह्योजोहेअर्जुनजोजीवमोरतेंबहि
र्मुखहैताकोउत्तमक्रियाकरतहै। ताहूको
फलनाहीपावतहै। औरउत्तमकार्यउनसोंहोय
नाहीसकतहैं। नानाप्रकारकेविघ्नपड़तहैं। तातें
उनजीवकोटिप्रकारसाधनकरो। सोउलटोश्र
महीपावतहैं। जोसंधानमेंतेंकणजोहैताको
निकासलेइ। तापाछेतुसहै। ताकोकूटतोह
थमेंछालापरे। परंतुसरवस्तुनिकसेनाही
सोकहेतें। जोतैसेंजोपूर्णपुरुषोत्तमतेंबहिर्मु

नयो।याकोलोकिकयालोकिककश
हुनाहीहै।याहतेंश्रीभागवतमेंश्रीऊद्धव
सोश्रीठाकुरजीआपकहेहैं।जोहेऊद्धवजो
जवमेरोभजनसुमरनकरतहै।साजीवकोया
लोकनसववस्तुकाप्राप्तहोतहै।याहीतेंपुष्ट
राणमेंब्रह्माजीनारदजीप्रतिकहेहैं।जानार
दजीवसगरेधर्मकोकरनवारेहैं।तिनकों
नएकश्रीठाकुरजीमेंहै।सोधर्मकोकरिकेंपुर्के
ओरजोप्रतीश्रीठाकुरजीकेसवधर्मतेनेप
सगरेअधर्मकोकरिकैवारीमेंहै।जोश्री
ठाकुरजीकेचरणारविंदकोनहीभजतहै।औ
रश्रीभागवतमेंराजापरिक्षितप्रतिश्रीशुकदे
वजीकहेहैं।जोहेराजायासंसारमेंश्रीठाकु
रजीकेचरणारविंदकेभजनतें हूसरोके
ईसाधननहीहै।जोजीवश्रीठाकुरजीकेचरणार
विंदकोभजतहै।सोविनाश्रमहीयासंसारस
मुद्रकोंतरिजातहै।औरजोजीवश्रीठाकुरजीके
चरणारविंदतेंविमुखहै।औरसोईप्रकारसंसा
रदुःखतेंविमुखहैदुःखतेंछूटतनाहीहै।और
श्रीठाकुरजीकेचरणारविंदकोभजनकरिकें

२॥
अनेक पापीजीव हते सो मोक्षके योग्यु नहीहे
सो सब तारि गये हे। अजामेल गजगनिका
गीधु रादास प्रहलाद विभीषण बलि आदि
देकें। ए सो श्री ठाकुरजी के चरणारविंदकें भज
नको प्रताप हें। ताहीतें एसें श्री आचार्यजी महाप्र
भु आप श्री पूर्णपुरुषोत्तमजो हे। तिनके चरणा
रविंदके आश्रयु विना ब्रजके पति जो श्रीकृष्ण।
तिनकी लीला हे ताको अनुभव नाहिं होइ जैसा
हें पंडितहे वेद शास्त्र पुराण सबनके जानतहे
परंतु विना श्री आचार्यजीके चरणारविंद चर
णकमलके आश्रय विना यह संसार समुद्र हें
को तारिनाहीं सकतहे। तो लीलाको अनुभव
उनको कहांते होय। और जीव श्री आचार्यजीके
शरण आये हे। सो श्री ठाकुरजीकी लीलाको अनु
भौव करिकें विना श्रम ही या संसार समुद्रको
तरि जात हें। अब या श्लोकमें यह सिद्धांत भ
यो जो के सो हें पंडित होय सो पढे होय वेद पु
राण शास्त्र सबनके अर्थके निरूपणके करिवेवा
रे होय। और भांति भांतिके वेदादिक कर्म हे। ति
न हूंको करत हे। यज्ञादिक अग्नि होत्र हें सब

भी तिकी औषकरत हैं। परन्तु यह कालके दोषकरिके संसार समुद्रकों तरि नाही सकत हैं। सो काहेतें जो विद्याकेमदकरिकें अभिमानी होंयातें उनकोंउद्धार नाही होत हैं। और जो जीव निःसाधन होयके दैन्यताकरिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके शरण आये हैं सो विना श्रमहीयह संसार समुद्रकों तरिजात हैं। और श्री आचार्यजी आप जो वेदकेकर्मादिक करत हैं सो लोगनके देखायवेकेलीयेंं और वेदकी मर्यादा राखिवेकेलीये हैं। और श्री आचार्यजी आप जो न करे तो कोई न करेगो और श्री व्रजके पति श्रीठाकुरजी आपु तिनकी शेवामें तत्पर रहें। जीनकों वेदनें ति नेति करिकें गुणवखानत हैं। ऐसो व्रजाधिपति के दर्शनकी प्राप्ति विना श्री आचार्यजी महाप्रभुनकें न होय। या प्रकार चार श्लोकको निरूपण भयो। अब आगें पांचों श्लोक कहत हैं। ताकों अर्थ निरूपन करेंगे॥ श्लोक॥ मायावादिकरीन्द्रदर्पदलने ना

ऽत्र श्रीमद्भागवताख्यदुग्ध

णवेदोक्तिभिः॥ राधावल्लभनामधेय
सदृशो भ्राजीनभ्रूचोस्त्वपु॥ ५॥ यह
मायावादरूपी जो कोई बडो मत है ताके
तिनके दलनहारे ऐसे श्री आचार्यजी महाप्रभु
प्रकट भये हैं॥ सो काहेतें जो श्रीभगवानकों
श्रीमहादेवजी कों भई॥ तुम मायावाद पृथ्वी
ऊपर प्रकट करि कें मोह उपजावो॥ तब श्री महा
देवजी ने श्रीठाकुरजी सों विनती करी॥ जो
मैं जीवन कों कौन प्रकार मोहित करों॥ और
यह अपराध है सो मोकों होयगो॥ तातें जीव
कों मोहित कैसें करों॥ ऊलटो में आपु के चर
णारविंद के सन्मुख जीवन कों करूं मेरो यह
धर्म है॥ और तुम्हारे चरणारविंदतें विमुख कों
नमस्कार करों॥ तब श्रीठाकुरजी ने श्रीमहादे
वजी सों कह्यो जो तुमकों या बात में अपराध
न होयगो॥ सो काहेतें जो मेरी आज्ञा है॥ तातें
मायावाद पृथ्वी ऊपर प्रगट करि कें मोह कों
ऊपजावो॥ महाकलिकाल पृथ्वी ऊपर आयो
तातें मायावाद हूं अवस्य कर्यो चाहिये जो

याभांतिसोंश्रीठाकुरजीनेश्रीमहादेवजीकोंआ
ज्ञादीयो।तवश्रीमहादेवजीसंकराचार्यजीको
स्वरूपधरिकेंप्रगटभयेसोवेदतेंविपरीतशा
स्त्रवकुत्तप्रकटकीये।औरकूटमंत्रतेंहवकुच
हीप्रकटकीये।जामेंक्रियाहमहाकष्टहेरूप
हे।औरकूटमंत्रकेफलहूंकष्टरूपहीं।इत्यादि
कघलीकरणमंत्रवकुचकीये।जामेंचेटकतंत्र
कालदेखकेंजीवकोंमोहप्रगटहोतहें।और
भांतिकेमंत्रजामेंअर्थहूंकछूनाही।और
वकुतहीजपहूंनाहीं।परंतुसिद्धहोजायाभां
तिसोंकरिकेंधनकीकामनाहोय।औरको
दूरोकरामंत्रकोंआधीनकरिकेंतिनकेंध
नसगरोहरिलेतहें।जोयाभांतिसोंइवमं
त्रमेंसोअर्थहे।जो [redacted] सोइवमंत्रमेंहे
औरएकादशीजोव्रितहे।ताहकेविपरीतअ
र्थनिरूपणकरिकेंदशमीविधाएकादशी
ताकोंकरनलागे।सोएकादशीहूकोफलनाश
भयो।सोकाहेते।जोवेदमेंकहेहेंजोदशा
मीविधाएकादशीहैसोश्रीन

रविंदत्तेवहिमुखहै। जेसेंश्रमृतमुक
केपात्रमें धरेहे। तिनमेंएकबूंदमदराकापरे
वहसवमदरासमानहै। ताकोंग्रसुरपानक
रतहै। औरवेदमेंतुलशीकीमालाकहीहे।जे
वैश्नवतुलशीकीमालापहिरेहै। तिनकेस
नमुखकालादिकेश्रायनाहिसकतहै। श्रो
रश्रीभगवानकेचरणारबिंदकोपरमप्रि
यहै। तुलशीकीमालाजोपहिरे। तिनको
भगवत्संबंधहोयएसेवेदमेंकह्योहै। सो
शंकराचार्यतुलशीकीमालाछुडायकेरु
द्रकीमालापहिरावेकोंनिरूपणकीयो। ए
सोजोरुद्राक्षाकीमालाजोपहिरेहोयताको
पद्मपुराणमेंयहकह्योहैजोमनुष्यरुद्राक्षकी
चितासमानहै।जेसेंचितास्परशहोयतोश
चैलस्नानकीयेतेंशुद्धहोय।तेसेंहीरुद्राक्षकी
मालापहिरेहोय।तिनकेस्परशतेंशचैल
स्नानकरेंतबशुद्धहोय।सोऐसीरुद्राक्षकी
मालावेदतेंविरुद्धअर्थनिरूपणकीयेहै।
औरसबदेवतानकेईश्वरणसोजोश्रीभग

ान जीन को ॥ श्री वारि कब्रमादिक भजन करे
चहैं। तिनको भजन छुड़ावै कों। शिवहीकोमु
ख्य ईश्वर निरूपण कीये हैं। जो या भांतसों श
कराचार्य वेदते विरुद्ध हैं। ए सो शास्त्रमायावा
दके प्रगट होत हीं हैं कीये हैं। जामें वेदतें विप
रीत होय। सगरी एथ्वी के जे जीव हैं तेसब ब्र
ष्ट भये और देवी जीव हैं तिन हूं के संग्य क
रिके संदेह भयो है। श्री ठाकुरजी को ह८ आश्र
य छूटो सो खूट गयो। उन मायावादकरिके
सब नको बहिर्मुख किये। तब श्री ठाकुरजी को
दया आई जो मेरी मायावाद प्रकट करिवेकी
आज्ञा शिवजीको दई हुती जो असुरजीवको
मोह उपजावके लीये। सो तो एथ्वीऊपर माया
वाद ऐसो प्रगट भयो है। जो मेरो महात्म्य ज्ञा
न सब जीव भूल गये हैं। सो अब मेरे दैवीजीवन
कों कोन प्रकार काढे जो याओ तसों आप म
नमें विचारे जो मेरी लीलाको अनुभवजी
वको होय तो जीव मेरे निकट आवें
लीलाको अनुभव जीवको कोन भांति सों

तासुविचारेजोलीलाकेअनुभवकरवावे
मेतोएकश्रीआचार्यजीकोसामर्थहेउन
कोपृथ्वीऊपरप्रगटहोयपुनोमायावादनको
खंडनकरिकेंदैवीजीवनकोंलीलाकोअनु
भवकरवायकेंमेरेपासआवोसोयछुआ
र्यश्रीआचार्यजीआपविनाकाहूसोंहोयनाह
हेसोकाहेतेजोलीलाकेअनुभवकरवावे
मेंएकश्रीआचार्यजीआपहीसमर्थहेंताते
श्रीठाकुरजीनेंश्रीआचार्यजीकोंआपमुखि
कायकेकहेजोतुमपृथ्वीउपरपाधारो
तोमायावादकोखंडन करिकेंदैवीज
वनकोंमेरीलीलारसकोअनुभवकर वा
इकेमेरीनिकटलेकेआवो तवश्रीआचार्य
जीआपहूंपरमदयालकरुणानिधिकोंदया
आई दैवीजीवनउपजोरदैवीजीवअ्भ्मा
रेहेंसोमायावादकेभ्रमकरिकेंश्रीठाकुरजी
केचरणारविंदमेंदृढआश्रयनाहीहुत
हेंताते एसेविचारकेंश्रीआचार्यजीआ
पपृथ्वीऊपरप्रकटभयेहेंतापाछेंए:

श्री परिक्रमा आपु कीये॥ तो सगरे दैवी जीव
हैं माया वाद के साथ में मिलि कै वेसो ई करन
लागे आचरण॥ सो श्री आचार्यजी महाप्रभु
आप पृथ्वी परिक्रमा करि कै श्री गोकुल पधा
रे॥ तहां श्री ठकुरानी घाट है॥ और गोविंदघा
ट के ऊपर एक चौतरो है॥ तहां श्री आचार्यजी
आप पोढे हुते॥ तहां छोकर को वृक्ष है॥ ताछो
कर भगवत्स्वरूप ही है॥ ब्रह्म छोकर याको ना
म है॥ तहां श्री आचार्यजी आप पोढे हुते॥ सो
जीवन के उद्धार को मन में विचार हुतो॥ जो
जीव तो दोष निधान है॥ और श्री ठाकुरजी तो
गुण निधान हैं॥ तिन सों संबंध जीव को कौन
भांती सों होय॥ ऐसी चिंता अपने मन में करत
हुते॥ तब श्रावण शुक्ल पक्ष एकादशी को अ
र्द्ध रात्रि को॥ श्री ठाकुरजी प्रगट होय ब्रह्मसं
बंध की आज्ञा दीये॥ जो जीव को ब्रह्मसंबंध
तुम करोगे॥ तिन के सकल दोष निवृत्त हो
यगे॥ जो या प्रकार श्री पूर्णपुरुषोत्तम ने आ
ज्ञा दीये॥ एपे तब श्री आचार्यजी आप विनय

हनहुप। तासमेंमेंश्रीकोभोगधरे। तापाछे
दामोदरदासहरसानीसों श्रीआचार्यजीआ
पकहेजो। दमलातेंकछूसुन्यो। तबदामोदर
दासनेकहीजो। महाराजश्रीठाकुरजीकेवच
नतोसुने परंतुसमुझेनाही। तबश्रीआचार्य
जीआपुआपुनेवैष्णवकेसमरूपवेकेलीये
सिद्धांतरहस्यग्रंथआपप्रगटकीये। याभां
तसोंब्रह्मसंबंधकीआज्ञाश्रीठाकुरजीदीयोत
पाछेंश्रीआचार्यजीआपमायावादकोंदेखेसो
मायावादकेसोपृथ्वीऊपरप्रकटभयेहें। जोम
मतहुथीकाहूकोंगिनेनाहीहें। तबश्रीआचा
र्यजीमहाप्रभुआपसिंहरूपजो। ब्रह्मवादप्रक
टके रिकें। मायावादकोविदारनकीयो। श्रीभा
गवतमेंजो। श्रीपूर्णपुरुषोत्तमरूपजोअनंतसो
जीवनकोंअत्यंतदुर्लभहे। सोश्रीआचार्यजी
आपश्रीसुबोधिनीजी आदिग्रंथप्रकट
करिकें। श्रीपुरुषोत्तमकीलीलारूपअनंतासे
अत्यंतदुर्लभहे। तिनकोवररवाअपनेशेव
कऊपरकरेहें। सोकाहेतें जीवअनेककाल

के बिछुरे कुं ते।। ता में माया वाद करि कें वकु
तहीं मलिन कुंते।। और श्री आचार्यजी महाप्र
भु आपने श्री पूर्ण पुरुषोत्तम की लीला हैं।। तिन
को वरखा करी।। सो दैवी जीवन के हृदै में संदेह
उमेर्भो तिभांतिके हुते सो दूर भयो।। सब जीव
कुं जन परम आनंद पायकें।। श्री आचार्यजी के श
रण आवत हैं।। तब श्री आचार्यजी आप नाम सम
र्पणको दान दैवी जीव कुं ते पर कृपा करि करवा
यो।। ता पाछें कोटिक कंदर्प लावण्य श्री पूर्ण पुरुषो
त्तम आदि।। श्री वृंदावन में रासादि लीला नित्य
करत हैं।। ऐसे स्वरूप जो श्री कृष्ण तिनकी शेवा
को उपदेश श्री आचार्यजी महाप्रभु आप करत
हैं।। और श्री आचार्यजी महाप्रभु आप गोव
र्द्धननाथजी की शेवा करि कें जीवन कों व
तावत हैं।। याभांतिसों शेवा करो।। जो शेवा में
उपरतो देखिवे में तो श्री नंदरायजी के घर की
रीति है।। बाल लीला देखावत हैं।। और भीतर
तो निष्केवल व्रजभक्तन की रीति को शेवा है।।
ताहूतें पुष्टि मार्ग कहियत हैं।। एसो सब रसन
सों उत्तम रस शृंगार रस हैं।। ताकी लीलास

हित्तभावहृदयमें राखनो यही उपदेश श्रीआ
चार्यजी महाप्रभु आपने दोवकनकों करत हैं
तामें प्रथम श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा प्रका
करत हैं। और ऐसें श्रीकृष्णजी हैं। श्रीपुरुषोत्तम पु
रुषोत्तम हैं जो सारस्वतकल्पमें प्राकट्य कियो
ये सो श्रीपुरुषोत्तम हैं श्लोक कल्पेसारस्वते
प्राप्ते व्रजगोपो भविष्यति। इतिच और कल्प
में प्रगट और नाहीं। और स्वतबाराह कल्पमें अ
र्जुनकी गीता भगवत गीता तामें उपदेश
दियो हैं श्लोक कल्पेस्मिन सर्वमुख्यं धर्मव
तीर्थेस्मि सर्वतः। इतिवाक्यात तातें। श्रीव
यकथनीय भजनीय एक श्रीकृष्ण हैं। श्रीगोव
र्द्धननाथजी हैं। सो कैसे हैं जो श्रीदक्षिण हस्त
को मूठी बांधी हैं। तामें अंगुष्ठ दिखावत हैं तामें
यह भाव है जो व्रजभक्तनके मनकों हरिकें।
तापाछें अंगुष्ठ दिखावत हैं तामें यह भाव है जो
व्रजभक्तनको हरिके तामें अंगुष्ठ दिखाय
रहे हैं। जो यह मनकहांजायगो। और दक्षिणभु
जा ऊंचे करें व्रजभक्तन को बुलावत हैं जो तु
म वेगि ही आवो। हम रासादिक लीला जो यामें

तिनसों करे दिगे और आपुने कुंजके द्वार ठाढे हैं ता
में श्री आचार्यजी आप सों जतावत हैं यह। जो
तवराई में ठाढे हैं। जहां चांई मेरे देवी जी
व हैं तिनकों तुम्हारे द्वार आगे कार करनो
है। तातें वे स्वरूप कों ऐसो जानीये। जो एक
श्री गोकुलके पति श्री गोवर्द्धन नाथ तिनकों
मिलनो नाहीं है। जो जीवनके लीये आपनी कुं
जके द्वारे ठाढे होइ रहे हैं। और जीव यह स्व
कों भटको डोलत हैं। तातें ऐसो भाव विचारिकें
श्री ठाकुरजी सों आप हैं। बडे बडे अवतार भये
हैं। और ज्ञान रूपि हूं बहुत भये हैं। मुनीश्वर हू
लोहींच भये हैं। और आचार्य हूं के हवाये हैं। पर
तु पुष्टि मार्गकी रीति सों कोई जीवनतें नहीं कुचें
तातें काहू सों पुष्टि मार्ग प्रकट कीयो नाहीं या औ
र काहू कों पुष्टि मार्ग को फल हूं न भयो है। सो का
हे तें। जो कोई सेवा को प्रकार जानत न हो ही है
तातें काहू कों सिद्ध हूं न भयो। और जे भये हैं तिन
कों मुक्ति ही सिद्ध कीनी ते होत हैं। जो भक्तिमार्ग
और कौन जाने पुष्टि मार्ग की रीति कों और कोउ

कहजाने। तातें श्री आचार्यजी आप समान हैं स
रो न को ई भयो न कोई हैं न कोई होवेगो सो।
काहे तें जो श्री आचार्य महाप्रभु आप देहभाव
हैं। श्री ठकुरजी श्री स्वामिनीजी सों कवहें सं
योगरसमें मग्न रहत हैं। सो शेवारूपनाना प्र
कार कीये हैं। प्रथम श्री यशोदाजी के ईहां श्री
ठकुरजी बाललीला करी है। सो स्वरूप श्री नवनी
त प्रियाजी हैं। जो नवनीत हस्त कमल में ली
ये हैं। श्री यशोदाजी के आंगन में रिंगनलीला
करत हैं। आपनो प्रतिबिंब मणिजटित खं
भमें देखिकें पकरिवे को धावत हैं। तापाछें कि
लकिकें हंसत हैं। सो बाललीला को प्रागट्य
श्री नवनीतप्रियाजी का शेवा में प्रकट देखियत
है। और श्री यशोदाजी के ईहां बड़े भये तब
गोचारण लीला कीये माखन की चोरलीला की
ये हैं। सो स्वरूप श्री मथुरानाथजी को हैं। जास
मय श्री मथुरानाथजी गोपिकान कों लेकें श्री
स्वामिनी के घर पधारे हैं। तहां दूध दही माख
न की चोरी करत में उहां एकांत में श्री स्वामि

नीजी आई।तब कहे जो।आज में पकरि कें श्री
नंदरायजी श्रीयशोदाजी के आगें ले के जाउं
गी।तब श्रीमथुरानाथजी के दोउ भुजा श्रीस्वा
मिनीजी पकरे हें।तब श्रीमथुरानाथजी औ
र दोय भुजा प्रगट करि कें श्रीस्वामिनीजी सों
विनती कीये।जो मेरे ह्यारे वस हो।हम को पा
स ही राखत हों।मेरे नीचले हस्त में संख है।सो
तुह्मारे ग्रीवा के आकार है।ताते में धारण की
ये हें।ऊंचे श्रीदक्षिण हस्त में पद्म है।सो कमल
वत है।तुह्मारो मुखारविंद है।कमलवत तु
ह्मारे हस्त हैं।कमलवत तुह्मारे चरण हैं।तिन
के आकार में धारण कीयो है।ऊपर वाम श्रीहस्त
में गदा है।ताको तुमारे कुच कुंकुम कलश के आ
कार है।राखे हैं।तथा श्रीहस्तकमल में कंक
ण हें।ताको आकृत करि के में आपने श्रीहस्त
कमल ही में राखत हों।ताते मों कों छोडि देउ
तब सकल अधरामृत को पान करि कें छोड
दये हें।ऐसी लीला को भाव श्रीमथुरानाथजी
में है।का आपनी व्रत व्याज।।अब श्रीगोपि
का ने काये हें।तब आप चीरहरन लीला

ये॥ सो स्वरूप श्रीविट्ठलेशरायजी को है॥ सो श्री
स्वामिनीजी के भाव में मग्न हैं॥ ताते गौरस्व
रूप हैं प्रगट॥ सो वस्त्रचोर में जो श्यामस्वरू
प हैं॥ सो सब गोपिका श्रीठाकुरजी को जानि
जाहि॥ ताते श्रीविट्ठलेशरायजी हू गौरस्व
रूप हैं॥ वस्त्रचोरी के कदंब ऊपर जाय बैठे
ठे हैं॥ सो पाछें गोपिन के मन में जो लज्जारूप
अंतराय रह्यो है॥ सो श्रीविट्ठलेशराय हू रिक
रिकें सब के वस्त्र हरे॥ यह लीला श्रीविट्ठलेश
रायजी के हृदै प्रगट है॥ अब रासपंचाध्याई मे
मुरली बजायके प्रथम श्रीव्रजभक्तन को बु
लायके पुलिन में घर में रहे हैं॥ सो स्वरूप श्री
द्वारकानाथजी को है॥ सब गोपिका पुलिन में जो
बैठे हैं वहां मध्य॥ बीच में॥ श्रीस्वामिनीजी विरा
जत हैं॥ तहां श्रीठाकुरजी के ओर की सखी स
न्मुख बैठे हैं॥ तहां श्रीठाकुरजी अचानक पधारे
हैं॥ तब सखिन को समस्या सों बरजी॥ पीछें सों
दोय हस्त सों वेणुवाद करे॥ सो या प्रकार रासम
य लीला श्रीद्वारकानाथजी को हृदै प्रगट हैं॥

अब श्रीगोकुलनाथजी हैं। सो गोवर्द्धनधारण
कीये हैं। सब व्रजभक्तनकी रक्षा कीये हैं। तब
कबहूं वाम श्रीहस्त सों श्रीगोवर्द्धनको उठाए हैं
कबहूं दक्षिन श्रीहस्त सों श्रीगोवर्द्धन उठाये हैं
तातें श्रीगोकुलनाथजीको दर्शन करतां ये हू
भावलीला सहित स्फुरत हैं। अब श्रीगोकुल
चंद्रमाजीको स्वरूप हैं। सो साक्षात कोटिम
न्मथः मन्मथ। जो गोपिकानसों रासपंचाध्या
ईमें श्रीठाकुरजी अंतरध्यान भये हैं। ता पा
छें गोपिनके रुदन कीयो। ता हां प्रगट भये हैं
सो ललित त्रिभंग स्वरूप हैं। पाछें महारास भ
यो हैं। तब आपदोऊ श्रीहस्त सों मुरली बजाय
कें सब व्रजभक्तनको रसदान करत हैं। तामें
वेणुमें वेध साक्षात हैं। सो षट् धर्म एक धर्मी
हैं। ताके ऊपर आंगुरी धरकें व्रजभक्तनको
समाधान करत हैं। सु सारा भक्तिके मैं वस
हैं। अब श्रीमदनमोहनजीके स्वरूपको भाव
यह हैं। जो निकुंजादिकके भीतर नानाप्रका
रकी विहारलीला करत हैं। इहांको टीको।

म॥

कामदेव देखिकें लज्जा को पावत हैं। त
हां भांति भांति कार समई लीला है॥ और ह
गोदके श्री ठाकुरजी हैं तहां भांति भांतिकी ली
ला है॥ अब श्री द्वारिकानाथजी को गोदके श्री बा
लकृष्ण जी हैं तिन सकट भंजन लीला कि
ये है॥ और श्री मथुरानाथजी के गोद के॥
श्री नटवरजी हैं सो लीला तृणावर्त के प्रसं
ग की लीला प्रगट कीये है॥ जो याही भांत सों
श्री नवनीत प्रियाजी के पास श्री बालकृष्णजी
तथा श्री मदनमोहनजी हैं सो जेभावलीला है
और श्री गोकुलचंद्रमाजी पास श्री बालकृष्ण
जी हैं तहां ऊलूखल लीला प्रकट है॥ और
श्री आचार्यजी महाप्रभु के श्री गुसांईजी के॥
ये सब स्वरूप वस है॥ तिन सबन में श्री गोवर्द्ध
ननाथजी लीला प्रकट है॥ सो या भांति जो स
ब स्वरूपन को शेवा है सो श्री आचार्यजी महा
प्रभु आप प्रकट कीयो जामें ७ ८ लीला प्रकट
है ता तें श्री आचार्यजी आप समान कोई भयो
न कोई है न कोई होयगो जो या भांत सों पु

च श्लोकको अपनिरूपण भयो है॥ अब श्लो
हं छट्टे श्लोकको निरूपण करत हैं॥ श्लोक
यदंघ्रिनखमंडलप्रस्रुतवारिपीयूषभृग
वरांगहृदये: कलितत्तणमिवेहलुत्थाकृत
द्विजाधिपतिरिंदिराप्रभृतिमृग्यपाद
भृंग: तेननपरितोषितस्तदनुगत्वमे
वास्तुमे॥६॥ यस्को श्री अब या श्लोक मे
कहत हैं॥ जो श्री आचार्यजी महाप्रभुन के
नखचंद्रमा जो हैं॥ सो मेरे मनमें जो नाना
प्रकार के अज्ञान रूप अंधकार हैं॥ ताको
हरि करन हारो हो॥ श्री आचार्यजी के नख
चंद्र हैं॥ सो काहे ते जो श्री आचार्यजी के न
खचंद्र में बडो प्रताप है॥ जो रात्रि को प्रकाश
करे॥ औ पूर्ण मासि के रात्रि पूर्ण होइ घटे
बडे॥ और सूर्य के आगे प्रकाश मंद होय जा
य ऐसी लौकिक चंद्रमा गुण हैं॥ और श्री आ
चार्यजी के नखचंद्रमा कैसे हैं॥ सदा एकर
स जिनको प्रकाश है तिनके नख
रूप कोटिक चंद्रमा वारि डारि

के मुखचंद्र को प्रकाश ऐसो सो श्री आचार्य
जी के मुखचंद्र है चरणकमल को जो आलो
किक अमृत है। तिनके हृदय में सो परम
निर्मल है। निर्विकार है। संसार के दुःख सुख
तिनको तुच्छ करिके डारि दये है। सो कहा है
तेजो। जहां एक चंद्रमा होत है। तहां अंधका
र आय सकत नाही। श्री ठाकुर जी की लीला
को अनुभव होन लागे। तहां कलि के जन्म
धर्म संसार के सुख की को कहे। देवलोक इंद्रलो
कन के सुख ब्रह्मादिकन के लोक को सुख
शिवादिक के लोक को सुख तुच्छ करि डार
देत हैं। या हेते श्री भागवत में श्री शुकदेव
जी राजा प्रीक्षित तें कहे हैं। जो जीव को
संसार के सुख फीको तहां ताई प्रिय लागत
है। जहां ताई श्री ठाकुर जी के चरणारविंद
को सुख नाहि पायो। और याही तें श्री भगव
द्गीता में अर्जुन प्रति श्री भगवान कहे हैं।
जो हे अर्जुन यह जीव जहां ताई मेरे चरणा
रविंद को सुख को नाही जानत है। तहां ता

ईयहजोसंसारकेसुखहैंसोदुखरूपहीहैं।ता
ताकेसुखमानिकेके लोगकरतहैं।औरज
बमेरे चरणारविंद कोमहात्म हृदयमेंआ
वतहैं।तबसंसारसुखकोतुच्छकरिकै
छोडतेहैं सोकहेतेजो मेरेचरणारविंद
हृदयमेंआयो।तहांअविद्यारूपजोकोई
नानाप्रकारकीविषयवासनासोदुरि हो
यजातहैं।सोकाहेतेजो श्रीठकुरकेचर
णारविंदकेसेहैं।जिनकोश्रीलक्ष्मीजीआप
ने हृदयमें लगायकें।परमप्रेमसोसेवन
करतहैं।औरश्रीठकुरजीकेचरणारविं
दकेसेंहैं।जोश्रीद्वारिकालीलामेंआवेहैं
पटरानीहैं।औसोलहहजारएकसोरानी
हैं।सोसबश्रीठकुरजीकेचरणारविंदपरम
प्रेमसोंसेवनकरतहैं।औरश्रीठकुरजीके
चरणारविंदकेसेहैं।जिनकोंब्रह्मादिक
शिवादिकोनारदादिक वडेवडे मुनिश्वर
सिहुध्यानकरतहैं।एसोहीजोश्रीआचार्य
जीकेचरणारविंद तिनकोजो

लगायकें स्तुमण करत हैं॥ एक दलमें हें भ
लतन्याहीं हैं॥ तिनकी अस्तुति श्रीगुशांईजी
आपश्रीमुखतें करत हैं॥ जेसे दमोदरद
स हरसाने॥ ओ कुंभनदास आदि प्रभृति
तिनके हृदयकमलमें तें श्रीआचार्यजी आप
सकदाणहें वाहरन्याहीं हे र हत हैं॥ ऐसे जो
भगवदीय हैं॥ सो आठप्रहर श्रीगोवर्द्धन
नाथजी की लीला को सर्व साधन करत हैं
जो पुष्टमार्ग को फल है॥ तिनको अनुभव क
रत हैं॥ जा विना दाणहूं रह्यो सकत नाहीं हे
ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके चरणारविंद
में गुण है॥ जो श्रीआचार्यजी के शरण आयके
दृढ त्वकरिकें अनन्य होयके॥ चरणारवि
दकों शेवन जो करे तहे॥ तिनके हृदयमें श्री
ठाकुरजी आपनी लीला को अनुभव करावत
है सो कहतें जो॥ के सोई उहहीन होय साध
नमें रहत नहीं त्ती है॥ अथ वाश्रद्र होय॥ जो
श्रीआचार्यजी के चरणकमल को दृढ आश्र
य होय तिनकी स्तुति देवता करत हैं॥ ऐसो

श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीपूर्णपुरुषो
त्तम हैं। इनके समान पृथ्वीऊपर दयालको
ई नहीं है। जो निःसाधनजीवनको परमफ
लरूप श्रीपूर्णपुरुषोत्तम हैं तिनकी लीलाको
अनुभव करवाये। जो याप्रकारसों बहु श्लो
कको निरूपण भयो। अब सप्तम श्लोकको।
निरूपण करत हैं॥ श्लोकः। अघौघतमसा
वृत्ते कलिभुजंगमासादिते जगत्यद्विष
यसागरे पतितमस्वधर्मे रतं। यदी
क्षणसुधानिधिः समुद्धितोनुकंपामृता
द मृत्युमकरोदरत्नगादरमस्तु मेत्त।
त्पदे॥७॥ याको अर्थः अब आगे हूं कह
त हैं जीवके सो है अघ का खान है। और ता
मसको आदि है है। और कलि जो है महाभारी
सर्प है। सो या जीवको नानाप्रकार की पृथ्वी
ऊपर नाच नचावत है। यह जगतमें विषया
दिक जो संसारमें नानाप्रकार के दुःख
स्वरूप समुद्र है। तिनहीं में डूब रह्यो है॥

ताको नाम महापतित कहिये जाको
द्धार नाही है ऐसो दुष्ट जीव है सो ऊ जो श्री
आचार्यजी महाप्रभुनके शरणि आवे तो
ताके हात तत्काल सकल दोष दूरि होय जा
त है ता हको पुष्टि मार्गको फल जो है ति
नको श्री आचार्यजी महाप्रभु आपु दान क
रत है ऐसे श्री आचार्यजी आपु परम द
न है पतित पावन है दैवी जीवन को
उधार इथि जिनको प्राकट्य है
ऐसे श्री आचार्यजी के चरण कमल को आश्र
य हढ करिको अपने हृदय कमल में राखे
तिनको यह कलिकाल महा सर्प है
रे संसार को ग्रास करत है कालके मु
में सब पी जात है ऐसो जो काल है ताको
तेजो वेऊ श्री आचार्यजी महाप्रभु
रुषोत्तम ताके चरणारविंद अपने हृदय
कमल में राखे है सो प्रसिद्ध श्री गुसांईजी
की वार्ता में लिख्यो है जो ब्राह्मण ब्राह्
श्री गंगाजी के तीर श्री ठाकुरजी शालिग्राम

और गायन की शेवाहू आछी भांति सो करे
हैं। गाय कों रास खवावत हैं। सो धोय पोंछ के
खवावत हैं। सो मति कहूं धूमो रज आवे।
श्री ठाकुरजी तो परम सनेह हैं। या प्रकार प्रे
म सहित। श्री ठाकुरजी की शेवा करते। तिन
के पास एक पंडित ब्राह्मण आये। सो सगरे दे
श ते पंडित कों जीत के आये हैं। सो तहां वै
ष्णव पास रह्यो। सो वैष्णव। सो वैष्णव चुटकी
मांग करिकें निर्वाह करतो। तामें ब्राह्मण ब्राह्म
णी और वह पंडित ब्राह्मण। श्री ठाकुरजी पी
छे ईन तीनो जनेन को निर्वाह होतो। पाछें पं
डित ब्राह्मण ने एक दिन देख्यो। वा वैष्णव ब्राह्म
न के अंग को चिन्ह देखवे में आयो। जो कालि
या को यह दोष कलंक माथे आवेगो। तासों
रा॰जा याको सूरा देईगो। ता पाछें पंडित ब्रा
ह्मण ने यह मन में विचारे है। जो मैं ईनके पा
स बहुत रहत हतो। ऐसो वह पंडित ब्राह्मण वि
चारि कें। ता पाछे प्रातःकाल भयो तब वैष्ण
व ब्राह्मण के द्वारे ऊपर वह पंडित ब्राह्मणनें

ठरह्यो ॥ और ब्राह्मणी रसोई करे ॥ और वैष्ण
व ब्राह्मण श्रीठाकुरजी की सेवा मंगला तें लेक
र कों शृंगार ताईं करि कें भोग धरि कें आपु
बाहिर बैठो कुत्तो ॥ इतने में वैष्णव ब्राह्मण कौ
पलक लागी निद्रा वश भयो ॥ ता में स्वप्न आ
यो ॥ ता नें कोई राजा के मनुष्य आए हैं सो मो
कों ले गए हैं ॥ ता पाछें मो कों सूरी दये हैं ॥ ए
सो स्वप्न में देखि कें चौंकि परयो ॥ तब वह वै
ष्णव ब्राह्मण जाग्यो ॥ ता पाछें वैष्णव ब्राह्मण
नें अपनी स्त्री सों कह्यो ॥ आज ऐसो स्वप्न दे
ख्यो ॥ तब ब्राह्मणी नें वैष्णव ब्राह्मण सों कह्यो
जो शरीर कों भोग हतो सो सब निवृत्त भ
यो ॥ और तुम रहवे गए हो ॥ तातें आप के श्रीगं
गाजी में स्नान करो ॥ तब वह वैष्णव ब्राह्मण फे
र स्नान कियो ॥ ता पाछें राजभोग श्रीठाकुरजी
को धरयो ॥ ता पाछें समय भये तब राजभोग
सराई कें आरती करि कें ॥ अनोसर कराये ॥ ता पा
छें चार पांच रुपैया सीधो कसा एक की ॥ एक बापं
डित को दिये ॥ अपने पुरुष स्त्री को ॥ ता पाछें वह

वैस्नवब्राह्मण वापंडितब्राह्मणकेसोंकह्योजो
चलोमहाप्रशादलेहु तबवापंडितब्राह्मण
नेवावैस्नवब्राह्मणसोंकह्योजो मेंतोअबही
स्नाननाहींकयोहों मेंतोतुम्हारेद्वारऊप
रप्रातकालतेंबेठोहुं जोआजतुमकोंयह
असाध्यखोटाआयोहे सोमेंबिचारवाहि
रनाहींगयोहों सोआबताईकछूहूंभयोना
हींसोयाकौंरणकहतहें तबवावैस्नवब्राह्म
णकह्योजोहें तबमेरीआंखिलागी तासम
यमोकोंराजाकेमनुष्यआये सोमोकोंलेजा
यकेमराद्योयो तबमरानिद्राचोंकिपश्चा
तापाछेस्नानकरिकेंभोगसरायो तातेंभो
गतोनिवृत्तिभयोहे तातेंतुमस्नानकरो
महाप्रशादलेऊ तबकहब्राह्मणपंडितजोह
तो सोवावैस्नवब्राह्मणकेपांयनपडे औरक
हेजो तुम्हारोधर्मपरमऊत्तिमहे जोसाक्षात
यहजोग्यहतो सोस्वप्नहाराणनिवृत्तिभयो
तबवापंडितब्राह्मणनेकह्यो वैस्नवब्राह्म
णसोंजोयहधर्मतुमकहतेंपायोहे तातें

महाकों सेवककरे तुमको नसे सेवको
सापूकार वरुणदास पंडितब्राह्मणसो वै
ष्णव श्रीगोकुलमें श्रीविठ्ठलनाथजी श्री
गुसांईजी हें तिनके हम सेवक हें इनकीकृ
पासों सब होत हें हमतो दास हें तबवापं
डित ब्राह्मणने कह्यो जो मोकोंह सेवककरो
तब वा ब्राह्मण वेष्णवने कह्यो जो श्री गुसांईजी
के सरण जाव तिनके अनुग्रह सो सब म
नोर्थ सिद्ध होयगो तब पंडितब्राह्मणने स्नान
करिकें आपनो नेयम करिकें महाप्रसाद ली
यो तापाछे श्रीगुसांईजी पास जायकें नाम
समर्पण कीयो यामें यह दिखायो जो श्रीआचा
र्यजी महाप्रभु के श्रीगुसांईजी के चरणारविं
दको आश्रय जो राखत हें तिनकों कालादि
क जो महासर्प हें सो ईनकोंभक्षन नाहि क
र सकत हें सो काहेतें जो भगवदस्वरूप
जो अमृत हे सो अष्टप्रहर पान ही करत हें
तातें कालादिक जो रमण जन्म के दुःखसुख
को जोग नांही करत हें सो काहेतें जो एकस

ताहूं श्रीठाकुरजीचरणारविंदको आश्रयहो
उत्तनाहीहै ताहूतें तिनकोंकालादिकवा
धकनाहींकरत्तहैं ऐसोश्रीआचार्यजीमहा
प्रभुनकेचरणकमलहै याप्रकारस्फुरत्तकृष्ण
प्रेमामृत सोश्रीगुसांईजीआपकृत्त तिनकी
टीकाभाषा मेंकीयाहै अबयाग्रंथकोफल
कहतहै सोएकश्लोककरिकें श्लोक मयी
चेदस्ति विश्वासः श्रीगोपीजनवल्लभेंतदा
कृतार्थ स्त्वयंहि सोचनीयं नकर्हिचि त्‌॥१॥
याकोअर्थ जोएकविश्वासश्री गोपीजनव
ल्लभहीकोराखतहै सोकृतार्थरूपही है
सोकाहेतेंजो श्रीगोपीजनकेवल्लभश्रीगो
वर्द्धनानाथजीहैं तिनकेचरणकमलको
जबदृढविश्वासजीवकोंभयो तबयाकोंकृ
तार्थमेंसंदेहकहारह्योहै कृतार्थरूपहीहै
सो अपनेउद्धारकी चिंता तिनकोकरणीना
हीं सोकाहेतेंजो श्रीठाकुरजीकोस्मरणभ
जनकरत्तरहनो सोश्रीठाकुरजीसर्वसा
मर्थ्यहैंप्रभुहैं सबकेहृदयकेअंतःकरण

कीज्ञानहैं तातेश्रीठाकुरजीसों आपनी
कछु वस्तुकीवांछनानकरनी सोकाहेतें
जोलौकिकमेंकाहूकीचाकरीकरीयेतौव
हचाकरचीरनाहींहोत तौश्रीठाकुरजीतो
परमकृपालहैं आपहीकृपाकरिकेंपरमफ
लकोंदेहिगें ओविश्वासकरिकें श्रीठाकुरजी
कोस्मरणभजनकरनोसोकाहेतेंजो विश्वा
सवेष्णवकोहृदयमेंराखनो जहांताईविश्वास
जीवकोनहोय तहांताईकोईकृपाकरोपर
तुकछुफलकीसिद्धनाहीहै एकाहेतें जोचात
ककोविश्वासएकस्वातिकीजलकोहै ओर
सोजलकेआश्रममेरहतहै परंतुपावत
नाही तिनकोयहस्वभावहै काहेतेंजोज
लयाकोजीवनहै ताहीतेंजलहेसोमीनकी
रक्षाकरतहैं तासेंआपनोजिवनजानिके
श्रीठाकुरजीकीसेवास्मरणकरनो
भलनोनाहीं ताकोनामदृढविश्वास
विश्वासदृढराखनो जैसेंलाडूकेगृह
तेंकृपाकरिकेंरक्षाकीनी विषकेलड्डु

मैंतोरदाकीनीहौ ओरदुर्वासाकोआपत्तेरता
कानीहै औनानाप्रकारकेविधनश्रीठकुरजी
नेदुरिकीये सोकाहेतें जोपांडवनकोदृढवि
श्वासहै श्रीठकुरजीआपुकेसेरहें तातेंदु
र्योधनकोसर्वसनाशभयो तातेंजाकियामें
विश्वासनाही सो सवश्रमहीजाननो ताहे
कछूहीफलकीसिद्धनाहीहै औरविदुर
जीकोदृढविश्वासजानिके वस्त्रकोभा
जी औरजनाकीरोटीआरोगे औरश्रीभाग
वतमेंश्रीशुकदेवजीनेराजापरिक्षितप्रति
कहेहैं जोरहूगणराजाकोहृदयमें
सभयोहैं नवसुखपालऊपरवैठिके
लमुनीश्वरपासज्ञानसुनिवेकोचले
हांजडभरथजीखेतऊपरवहे
कोस्मरणहृदयमेंकरतहे
केमनुष्यनेआपके
तनमेंलगाय परंतु
नहीभगवइच्छामात्रिकेमनमें
हे तापाछेवेते

चायकेंपगधरते सोकाहूतो जो भगवद्दीद
यावततें ताते सुखपालहालेवकुतहैं त
वराजा रहूगणने कह्यो जो सुखपालकोच
लतहै तववह्योरकहुरननेकह्यो जो एकेन
योकहुरहलावतहै तवराजा जड्भरथजी
सोंकह्यो जो देखतमें तो तं मोटो ताजो है औ
रअबहुं वकुतपंथहीनाहीं आयो औरमा
रगकुचोनीचो नाहीं है तंजो टेढो टेढो च
लतहै सो मोसों तूं डरत नाहीं है औरम
रिवेकोहूं डरत नाहीं है जो या प्रकार सों रा
जा जड्भरथ कह्यो तव जं डभरथके
वेरसुनिकें चुपहोय रहे तव राजा बोल्यो
जो मेहूं उत्तर नाहीं पायो तव जड्भरथजी
हृदेमें विचारे जो यह राजा ज्ञान सुनिवेकों
चल्यो है जो याके हृदयमें दृढ आश्रय है
यह राजासी है ताते यासों बोल्यो चाहिये त
व जड्भरथजी राजाके ओर कृपाकरिकें
देखिकें मंद मंद हास्यकरिकें बोले जो तुम
कहे जो वकुत मोटो है सो तो काहूको शरीर

स्थूलहोयकाहूकोसत्तमहोयहै औश्रीप्रभु
जीकोअंशजोचैतन्यहै सोएकरसहैजो
हाथीमें सोईचींटीमेंयत्तमेंबराबरहै और
तुमनेकह्योजोवृत्तपंथहूनाहीचल्या सो
देहजीवजवत्तश्रीप्रभुजीतेंविछूरेयाहै परंतु
अवहूहारमानिकेवैठिके श्रीप्रभुनकोसुम
रणनाहीकरतहै औरतुमनेकहेजोमार्ग
सोधोहै सोहेराजाश्रीप्रभुजीकोमार्गहैसो
तोसुधोहीहै यहजीविद्याकेकारिकेभूल
गयोहै सोटेढेमार्गमेंपरेहैं जोयातेंरंके
होकहेगे औरजोतुमकहेजोमोत्तेनाहीड
रत्तरहे सोतोमांटाकेटेलतुंहुहै औरमा
टाकेटेलयेहूहै कहारहूमाटाकेटेलहै जे
सेंकाठकीपूत्तरीकोनचावैताप्रकारनचावेत्ते
सेंहोंश्रीठकुरजीकौंयाकोयाप्रकारनचावत
है जोयामेंडरकहां औरतूंकह्योजोमरिवे
हुकोडरनाहीहैं सोहेराजायसंसारमें
वकोटिवारमरतहै औजीवतहै ज

रणाडु-खनानाप्रकारकेपावतहैं परंतु
तेहू नारिवेकोज्ञानप्रगटभयो जो वृजकुम
रपुनीनेकेयो तबराजारहूगणकेकोज्ञान
प्रगटभयो सोपालकीतेंउतरिकेकूदिकेज
डभरथजीकेचरनकमलऊपरवीनती
करीजो महाराजमेरे अपराधक्षमाकरो
तुमतोभगवदीयहो मेरेमनतुम्हारीका
नीसुनिकेंमेरोहृदयकेज्ञाननेत्रहैं सोउ
घरनलाग्यो तातेंमोकोंज्ञानसुनावोजातें
मेंश्रीप्रभुजीकोपाऊं तापाछेंराजाजडभर
थजीज्ञानसुनायो यातेंसंदेहदूरहुवो सार
जकोसबदूरिभयो यातें जाकेहृदयकेमें
श्रीप्रभुनकेमिलनकीचाहनाहोइ जहांदृ
विश्वासभयो तहांफलकीप्राप्तभईहै तो
दृढविश्वासश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके
चरणकमलमेंदृढकोप्रकारहोय ताकेली
येश्रीगुसांईजी आपस्वरूपरसकोभेदप्रेमामृ
तग्रंथ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकौजामें

स्वरूप प्रकट है ऐसो ग्रंथ श्रीगुसांईजी प्र
गट कीये हैं तातें सब आश्रय छोडके ऐक
श्रीवल्लभाधीश को स्मरण करिकें या ग्रंथ
को पाठ करे जो वैष्णव सब प्रवर्त्तक करे तो
श्रीआचार्यजी महाप्रभु के चरणकमल में दृढ
विश्वास आवे और वैष्णव को हृदय शुद्ध होय शु
चित्त बेक अन्याश्रय होय हैं तो सब आप ही तें
दूरि होय जाय विनाश्रम ही और चित्त ने अं
तराय होय सो प्रतिबंध सब दूरि होय जाई स
ब श्रीठकुरजी की लीला जो नाना प्रकार की है
बाललीला गोचारणलीला दानलीला गोवर्द्ध
नलीला व्रजभक्तन को रासाकरी सो लीला
रासादिक सब अनुभव होय और गोपी
जन वल्लभ यो है श्रीपूर्णपुरुषोत्तम तिन
के चरणारविंद में परम प्रेम जो है श्रीपूर्ण
पुरुषोत्तम को सो सगरो प्राप्त होई और सो
ब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो मैं यह स्फुर
द कृष्ण प्रेमामृत ग्रंथ की टीका कयो है।

नकिरणकरिकैंअषिनभईहैं।प्रियवल
नकाश्रीठकुरजीकोप्राणप्रियाकीमुद्रि।
कासोनखकेकिरणअषिनशोभितभई
है।६४। श्लोक॥ विविधमहामणिजटि।
ताःकनकमयामुद्रिकास्त्वंगुलीषुद
शसुनखोदितदीधितिभिषासुविरेजुरे
णती॥६५॥ भाषा॥ भांतिभांतिकेमहाम
णिजटितसुवर्णकीनीहैंमुद्रिका।तिन
कोमेंअंगुलीनविषैंओरनखतेंउदित
कहेंप्रकटभईजोदीधितिकहेंतेकि
रणकांत्यतानखकेकिरननहीभएहैं
आभूषणउहमुद्रिकाकोताकरिकेउ
भियतहैं।हेएणदीमृगनयनी संबोध।
नहै।६५।श्लोक॥नेमोवाहूवतविषलतो
प्रेमपारषएणेनोवातस्यामटुकरत
लेकिंतुपंकेरूहेतो॥नाप्यंगुल्यःसखि
समभिमाःश्रेणयस्तदलानांमेनेचंचन
खरमणयःकिन्तुतेषांप्रभैव॥६६॥भा
यहश्रीचंद्रावलीजूकाबाहूनहोयातके

हाहै तेहर्षकरिकै कहतुहै। यह विषलताहै
विषलताकाहेकै जो कमलकेनालकेवीच
कोमलतानु होतहै। सोप्रेमरूपी जो अमृतता
करिकैं पूरणहै। अथवा वाहै। तिनकोंको
मलहथेली नहैयत्तो कहतुहै। ते कमलको
दलकोहै

नोपतिरेषकुसुमायुधवाणराजपरूहनन
खसमणिकांतिभाजः किंनुद्वियालिरविय
दुविधोजयायकामार्पिता सुमुखिशानशि
लीमुखाया: ॥६०॥ अर्थ यह है सो ऊनकेहा
थनहेयाय यह है सो कुसुमआयुधको जो कं
दर्पवाणराजतहै वा मनमें तो श्रेष्ठहै। जो क
मलपुष्पऔर यह नखकेमणिकी कांति
कोशोभानहोयत्तो कहतुहै। प्यारीसखीर
तियहूजीतवेकोहै सुमुखे तीक्षणशि
लीमुखी अग्रभागकुं कंदर्पने वाणकेआ

ती रतन है ए काम घाते कीयो है॥ है॥...
थरागतिरियं वरलानां चार लेकस्य कथ
न्नकरस्याद्दश्यते तिमु... ति नकासांसे
शयःसखिवम्रवचो... टो। अर्थ मंथर
हलुये गतिजो ये हरिलोकी॥ और हस्ती को सुं
डुहांके सो सुंड स्थान अत्यंत सुंदर है जो तिन
ह खियतु हो या करिके है सखी काहको
ऊरुजो जंघा तामे संशय न होत भयो॥ ६५
नो कदलीकांड विनिर्मित हि डालास्तंभ
म्ममे वेतरा॥ कुसुमाधस्यमन्येतस्यानो
हूयंसरव्य॥ ६६॥ अर्थ केलेकी डांडीके
पातनुको ऊपर तें छीलके निर्मडांग
की निमितसमारे हि डालाके दोऊ स्तंभ
है॥ ते निश्चय हो है सखी यह दोऊ मे
कौं कंदर्प काम है मैं मानत हों॥ ये दोऊ
घान होय॥ ६७॥ श्लोक तस्याःसानंद गोविं
मानसा यामृगीदृशः॥ मन्ये रति गृह स्तं
यं जानुद्वयं नतत्॥ ७४॥ अर्थ ताकी...
सहित जो गोविंद श्रीकृष्णचंद्र के मन
... हे मृगनयनी मे मा...
नंदके निमित है ... रतिकेमंदि
और रति कंदर्प का ...
एदेउ स्तंभ है॥ मदन सदन के ए दो
... ज्या जाते जो...

रणेकेनाचे ताकोंकहियतहै।७१। श्लोक वि
विधनूपुरसिंजितमोहितत्रिदशनाथवधू
वरमानसं।स्फुरदलक्तकरंजितमंगुली
षपिश्रुतेश्रुतेचरणद्वयं।७२। भाषार्थ भां
तिभांतिनूपुरकेनादकरिकैमोहे।त्रिदशे
नाथवधूजोइंद्रवधूजोइंद्राणीमेंश्रेष्ठ
इंद्राणीकेअंतःकरणऔरमहावरकरि
केरंगेहुएदोउचरणारविंदा।औरवासोंअं
गुलीहैंसोदेदिप्यमानहैं महावर सुंदरसें
यगुली।औरसुंदरचरणारविंदरंगेहैं।७२।
श्लोक स्मितलवलज्जितरतिपतिकि
तचरणेसरसिजप्रणतौ।प्रतिविंवितास
दीयाश्चंदनविह्वलयाननखाः।७३। भाषार्थ
श्रीवृजलक्ष्मीकेमंदहास्यकोजोलेशमात्र
ताकरिकैं।अथवामंदहास्यकी लेशशो
भाकरिकेंलज्जाकोप्राप्तभयो।लज्जाहैसोकं
दर्पसोलज्जायुक्तकरिकैं।श्रीचंद्रावलीजूकेचर
णकमलकरिकैंदंडवतकीयोहै।तावहै
सोकंदर्पकेलीलाकोजोचंदनचांदलोविंदु
कासोप्रतिविंवकापंक्तिकेप्रतिविंवहैं न
खनहोय।७३। श्लोक तस्याःकलेंदुसंगहार
अंजनदृशाभाविसंभावयिष्ठा।तद्योग्यला
...पादयुगं।सा

एजी वनेताके पूजाको जो मद ताकरिकें
छ हूं मानै हैं इन दिनकों आलीदेव
ाकों औरब्रह्मादिकनकों हूं अवगगए
ातुछकरिकें गनेत हैं। चंचलजोहैने
त्रताकरिकें कौन है जो मो हुकों प्राप्त न होय
७६॥ श्लोक ॥ सखीशरत्‌रतांचलहूलये
केकिंणीनूपुरहा। मंदकलेखिजितां
चेतमनोऽनंगत्यावने। षयस्यसहितोप्र
ाप्यपसृत्ताकुंजतीपुरोदर्शसखिसुं
रंमनहिदूरंत्त स्वामनाकू॥ ७ ॥ अर्थ
ववश्रीचंद्रावलीजी असंख्यातसखीसों
ष्टित होयचलतहैं। कैसेहैं जो चंचलहैं
नहैं। रडाकंकणकिंकणीतदूपुरादिकाओ
रघुघुरूताकरिकेंवडुतहैं। अल्पक्रमधु
रशब्दयमानजा नो मनोऽनंगजोचापल्य
गत्यताको प्रजाकरतहैं। याप्रकारकरि
केवन विर्खेचलतहैं। तवऊहांसखीसे
हितश्रीव्रिजराजजीके सुतपत्रजोह सु
दरीनकों जानदेखोपुरेकहतहैं। सखी
४ आलि दूर थोडएकदूरतेंतिनकोंश्रीठाकु
[illegible]

॥ चकितनयनंदृष्टा तदा नेत्रपंकजा
नसमशकादातुंदृष्टिमन्ना गपिमाधव
॥ निजसहचरीशंकालज्जावधानमपि
त्रिजप्रियस्वचित्तदानाभूत्तस्यप्रियाह
तचेतसः॥७८॥ श्रीचंद्रावलीजुको
मुखकमलसचकितदृष्टिनेत्रकरिकैदे
खतदेखतनेत्रकोकछूथोडोसोफेरला
वनेकोनीकाप्रकारसहितनाहीहै॥ श्री
ठाकुरकोअंतःकरणचित्तसहितसवश्र
प्रियाजुनेहरलीनोहै॥७८॥ श्लोक॥ चंद्र
दनासहासोक्तिजलप्ररिमलानिलैः॥ त
त्संगमद्भावागेषुसंगतः॥ पलकंव्यधात्
॥७९॥ अर्थ॥ तवश्रीचंद्रावलीजुनेहरली
नोहै॥ हाससहितहासद्रुक्तिकही तातें
मुखकमलवचावचाहै॥ सुगंधपरिमल
वायुहै॥ तवश्रीठाकुरजीकिआपनेअंगनि
संतिनकेसंगमनाहाहै॥ रोमांचितभये
सात्विकआविर्भावभयाहै॥ ७९॥ श्लोक
थमस्पानंनुसंगमोम्भवेत्कथंवा तसहच
रीशातः॥ इतिचिंतयंजुपायंज्ञात्वाहरि

हैं सो पालन ॥७९॥ अथ क्यों करि कै
निश्चय यासों संगम होय ॥ अथवा क्यों क
रि कै ईहां सखीजानें तें यापुकार विचा
र करि कै ॥ ताकों उपाय कोइ नहि ॥ ताक
के उपाय ज्ञान करि कै श्रीठकुरजी गोपा
न कों कहत भये हैं ॥८०॥ श्लोक ॥ प्यो गोर
नविक्रियार्थमखिलागच्छेत्स्पटतो चित्तं
इदानंतत्र दिहान यध्व मच्चिरान्मत्संन्निधौ
गोपिका ॥ मा जानुस्पृशतोक्तिभिः पुरि मि
मावाच्योदित्ति स्वामिनी प्रोक्ता लिछतनिष्ठते
ते [illegible] वचनाल्ले त्वागमत्सत्वरं ॥८०॥ भावार्थ
सब गोपिका गोरस वेच के अर्थ निश्चय क
रि कों जात हैं मेरे स्वन्नीधानसें गोपिका स
वदान विनदाये जात हैं ॥ मत जाव रहोर हे
कान्हे जाव यह वचन करि कैं वालक सखला
स्विनीजी प्रति कहत हैं गोपी पास चहि वेग
आये हैं ॥८१॥ श्लो ॥ दानेत्रका चिहु वोस्ता न
किमरे गोपदर्पिका: ॥ पाकारयति वोनंदनं
दनो गोकुलाधिप: ॥८२॥ अथ टीका ॥ गो
पी गन्ना त गोप वालक प्रत्य वोली जो ॥ कहे
गोप हरका अनादर करि कैं तुम वेला

तुम श्रीनंदरायजू श्री गोकुल के अधिपति
के बेटा काहे कों बुलावत हो ॥८२॥ श्लोक ॥ क
थमेवं वयं किं वा दास्य स्त्वस्य कुलांगनाः
याता प्रतिष्ठयास्माकं नत्वेवं यस्त्रिनाषिक
॥८३॥ अर्थ ॥ कहा करि कें या प्रकार करिकें
हम कों बुलावत हो कुलांगना कहे सो हम
कहा नंदराय कुमार की लौंडी है जाकी प्र
तिष्ठा सो हम कों तुमने जो यह त्रिनाषिका
कहि तें जो डर दिखावत हो सो हम तुम्हारे
डर पायवे तें डरवे वारे न होंय ॥८३॥ श्लोक ॥ न
वयं स्वत एव किंचिद् त्रस्ताः कुलयोषित्सु सख
हं सा वदामः ॥ व्रजनाथ वचः परं विधेयं तु
धिताः किन्तु गन्तुन्न स्वगेहं ॥८४॥ अर्थ ॥ बा
लक गोप के कहतु है जो न कछू हम आपु
ही तें कछु डर चेकरि कुलवधू विषे सो हम
सो कह्यो है ॥ ये व्रजनाथ वचन कह्यो है गो
पिका प्रति कहतु है गोपा कित जाव अपुने घर
कों ॥८४॥ श्लोक ॥ माया तानंद शपथो व्रजना
थाज्ञां विना वनेशस्या ॥ इंद सखी त्वदिपिनं कु
तस्तदपि परं न स्मात ॥८५॥ अर्थ ॥ अब बाल
क कहत हैं जो तुम कों श्री नंदरायजी की सोंह

जनाथ ठाकुरजीतिनकोंआज्ञाप
।तिनकेवचनविखेंमनआज्ञाओहैएवींहैं
ा उत्तरईकृष्णकेवचनयहजोतुंदयौ
तनकोवचनहैतुमारेवनकहांतेआ
ायहवनतोहमारोहैसोकहतेजोउ
ंहूंत्योहोंऔरहमहूंत्योहैं नातैहमारे
ै॥८५॥श्लोकवक्रमावचनेवदाचिदृश्यते
नत्वलौकिके॥वक्रिमाकिलशब्दस्यधर्म
त्सस्यदृश्यते॥८६॥श्री अवफेरवालक
कहतहोतुमारेवचनहैंसोटेढेकुटिलहोहैं
देखियतहैं।यनिश्चयअलौकिकदेखिय
तहैं एसेहमकबहूंदेख्योनाहीं।उत्तरईकृ
ष्णकेवचनकुटिलतानिश्चयकहुवचन
शब्दमेंहोतहैकुटिलताधर्महैं।श्रोतिनव
नेत्रनमेंग्रहणकरिकैंकहियतहैं॥८६
श्लो॰न्यायोपिपठितः किंतु अवस्थातिविद
था॥किमन्यायंपाठयितुंमधुनात्वंसमा
॥८७॥अर्थ अवएवोहैवालकके वचन
तुमजोयहकहतहो।जोकुटिलताक
शब्दमेंग्रहणकरियेतोकहांतुम
नकेवच

तुम श्रीनंदरायजू श्री गोकुल के अधिपति
के बेटा काहे कों बुलावत हो ॥८२॥ श्लोक क
थमेवं वयं किंवा दास्य स्तस्य कुलांगना:
याता प्रतिष्ठ यास्माकं नत्त वयं भिलाषिकु
॥८३॥ अर्थ कहा करि कें या प्रकार करिके
हम कों बुलावत हो कुलांगना कहे सो हम
कहा नंदराय कुमार की लौंडी हैं जाका प्र
तिष्ठा सों हम कों तुमने जो यह भिलाषिका
कहे ते जो डर दिखावत हो सो हम तुमारे
डर पाये ते डरवे वारे न होय ॥८३॥ श्लोक न
वयं स्वत एव किंचिद् स्वे: कुलयोषित्सुस
हसा वयम: ॥ व्रजनाथ वच: परं विधेयं
धित्ता: किन्तु गच्छत स्वगेहं ॥८४॥ टी० वा
लक गोप कें कहत हैं जो न कछु हम आपु
हीते कछु उंचे करि कुलवधू विषे साहस
सों कथ्यो है ॥ ये व्रजनाथ वचन कायाहे
पि कापु त्तिक हत है गोपा किन्तु जाव अपुने
कों ॥८४॥ श्लोक माया तनंदशपथो व्रजना
थाज्ञां विना वनेत्रास्पा ॥टी० दास्यो न दिपिनं कु
नस्त दंपपरं नस्मात् ॥८५॥ अर्थ अब वालक
क कहे हैं जो तुम कों श्री नंदरायजी की सोह

अनाथ ठाकुरजी तिनको आज्ञा वि
।ति तिनके वचन विषें मन आओ ताहि रहैं
ो उत्तर दई लक्ष्मन के वचन यह जो तुं दही
तन को वस्त्र न हैं। तुम्हारे वन कहां है आ
ाय यह वन तो हमारो है। सो क्यों है तें जो उ
ठं ह्वा है। और हम हू स्यो है। नाते हमारे
॥८५॥ लोकवक्रभावत्ने वह्वाचिदृश्यते
न त्वलौकिके॥वक्रिमा किल शब्दस्य धर्म
लस्य दृश्यग्रह॥८६॥ अर्थ॥ अब फेर बालक
कहत हो तुम्हारे वचन हैं सो टेढे कुटिल हो है
देखियत है। ये निश्चय अलौकिक देखिय
त हैं ऐसे हम कब हूं देख्यो नाहीं॥ उत्तर दई लक्ष्म
न के वचन कुटिलता निश्चय कहु वचन
ाषू में होत है कुटिलता धर्म हैं। लौकिक वके
न्त्रन में ग्रहण करिकें कहियत हैं॥८६॥
लोऽन्यायोपि पठितः किंतु अवस्याति विदग्ध
ता किमन्यायं पाठयितुं मधुनात्वं समागतः
॥८७॥ अर्थ॥ अब एवो है बालक के वचनय
तुम जो यह कहत हो जो कुटिलता क
शब्द में ग्रहण करिये तो कहा तुम न्या

॥ तुम श्री नंदराय जू श्री गोकुल के अधिपति
के बेटा काहे कों बुलावत हो ॥८२॥ श्लोक क
थमेवं वयं किंवा दास्यस्तस्य कुलांगना:
यातप्रतिष्ठयास्माकं नत्तवेयं विभीषिका
॥८३॥ अर्थ कही करि कें या प्रकार करि
हम कों बुलावत हो कुलांगना कहें सो हम
कहा नंदराय कुमार की लोंडी हैं जाकी प्र
तिष्टा सों हम कों तुम नें जो यह विभीषिका
कही ते जो डर दिखावत हो सो हम तुम्हारे
डर पायके डरवेवारे न होंय ॥८३॥ श्लोक न
वयं स्वत एव किंचिद्दुस्थे: कुलयोषित्सु सत्या
हसो वचस: ॥ व्रजनाथवच: परं विधेयं तु
धिता: किन्तु गच्छत स्वगेहं ॥८४॥ अर्थ वा
लक गोपक कहत हैं जो न कछू हम आप
हीतें कछु ऊंचे करि कुलवधू विषें साहस
सों कह्यो हो ॥ यें व्रजनाथ वचन काया हे गो
पिका प्रति कहत हे गो पांकिं तु जाव आप घर
कों ॥८४॥ श्लोक मायातनं दशपथो व्रजना
थाज्ञां विनावनेत्यायुदृंदाग्रो नदीपि नंकु
नस्तदपयं परं नस्यात् ॥८५॥ अर्थ अथवा ल

अनाथजोश्रीठाकुरजीतिनकोआरा
ातिनकेवचनविखेंमरात्र्यात्र्यातिपूर्वोर्द्ध
प्राउत्तरदेतकुनकेवक्रवचनहजोदेखी
तेनकोवक्रवहैं।हमारेवनकहांतेआ
ायहवनतोहमाराहै।सोकाहेतेंजोऊ
गृहस्थीहै।आरहमहस्त्रीहैं नातेंहमारे
हैं॥८५॥ श्लोकवक्रमावक्रवद्वाचिदृश्यते
नत्वलौकिकं॥वक्रिमाकिलशर्वस्यधर्म
लस्यदृश्यते॥८६॥ अर्थअबफेरबालक
कहतहोतुमारेवचनहैंसोटेढेकुटिलहीहैं
देखियतहै।यनिश्चयअलौकिकदेखिय
तुहैं ऐसेहमकवहूंदेख्योनाहीं।उत्तरदैअ
क्केवचनकुटिलतानिश्चयकरिवचन
शरुमेंहोतहैकुटिलताधर्महै।ज्योंतिनके
नेत्रनमेंग्रहणकरिकेंकहियतहै॥८६॥
श्लो॰न्यायोपिपृच्छते:किंतुअवक्रातिविदग्ध
धा॥किमन्यायंपाठयितुमधुनात्वमागतः
॥८७॥ अर्थअबपूर्वोक्तबालककेवचनय
हैमजोयहकहतहो।जोकुटिलताकहां
शरुमेंग्रहणकरियेतोकहांतुमन्यायश

५८.२ श्री
२६॥

अन्यायपटावनकोंतुमआवआयेहौ॥७
श्लो॥ तावद्विलंवमसहिष्णुरमंदमेवत्त
कांचीकलापकलसंजितमंजुगत्या॥गोव
र्द्धनाद्रिशिरशश्चपलोत्तरायश्चंद्रावल
निकटमाप्रमदंवजात॥८८॥अर्थ॥य
हैसववचनगोपवालकहे॥भक्तआरद
येतहांताईविलंवश्रीठाकुरजातेंसह्यो
नगयो॥वहुतजोहायविलंवतेतेंआच
कहेंकहा॥कंचीजोकटिमेखलातद्घ
काकोशब्दकरिकेंऔ अव्यक्तमधुरशब्
करतसुंदरगतिचालकरिकों॥श्रीगोवर्द्ध
नपर्वतकेशिखरतें॥सोऊपरतेंदेखि
उतरेचपलचंचलहोतस्यो॥ओरउत्तराय
उपरणोवस्त्रसहितयाप्रकारश्रीचंद्रा
लीजकेनिकटआवजातश्रीकृष्णचंद्र
आवतभयेहैं॥८८॥श्लोक॥मनोवचोगोच
रलोचनानांतसौंदर्यलेशंसुविचित्रवेषं॥
स्मितंप्रियानंगविमोहनंसादरशंगो
पेंद्रकुमारमाराम॥८९॥अर्थ॥मनओर
वचनतोगोचरजाको

कहिबे कों सामर्थ्य नाहीं ॥ केहू जो
केनेत्र अंचर प्रांत भाग के अंतएक को
का सों दर्यत्ता एक लेश मात्र हूं मन कों
और वचन कों गोचर है ॥ एताद्दश श्रीठ
कुरजी को श्री चंद्रावलजी व्रिजराजजी के
कुमार कों अपने निकट हाजुदेखतहु
॥८८॥ श्लोक ॥ वदनसुधानिधि सुखमाज
नविधि मस्राद्दशंकुरंग द्दशां ॥ नाशकदु
हत्तुयन्सहे वसहसा मनोप्यासार ॥८९॥
॥ पर्जो श्रीठकुरजी को मुखके सो है सुधा
निधिचंद्रमा है ॥ और शोभा को तो समुद्र
हैं ॥ ता विखें कुरंग द्दशी श्री चंद्रवलीजी के
नेत्र द्दष्टि डुबत भई ॥ तिका सबु कोंसाम
र्थ्य नांही ॥ निकसयकत नाहीं हैं ॥ जातें ह
ष्टि का साथ एकायक मन डुबे यो है ॥८९॥
श्लोक ॥ अपांग विभ्रमोत्तुंगस्लोरंगे सान्मनो
द्दशो ॥ अगाधे पातितेह्यस्मा मशक्रौ वहि
रागती ॥९०॥ अर्थ श्री ठकुरजी के कटाक्ष
जो विलास ता करतु विलास कों जो ऊंचा

अंत्यापुपरावनकोंल्मअवझायरागा८०॥
... लावहिलंवमसहिल्सुरमंदमेचन्त
कांचीकलापकेलसंजिनमजुगत्या ॥गव
हूंनादिशिरशश्चपलोन्तरीयश्चंद्रवेली
निकटमात्रमदंतुजात॥८८॥अर्थ॥य
हलर्ववंचनगोपवालकहो॥भक्तऔतरद
येताहोताई विलंवश्रीठाकुरजीतेसर्यो
नेगयो॥वकुरजीहोयविलंवतेसेश्याचतु
कहेंकहो॥कंचीजोकटिमेखलातदूघी
काकोशब्दकरिकेजो अव्यक्तमधुरशब्द
करतंसुंदरगतिचालकरिकेश्रीगोवर्द्ध
नपर्वतकेशिखरतें॥सोऊपरतेदरिके
उतरेचपलचंचलहो॥तत्थ्या॥ओरउत्तरीय
उपरगोवस्त्रसहित याप्रकारश्रीचंद्राव
लीजूकेनिकटश्रीठाकुरजी आवतभये
आवतभयेहें॥८८॥श्लोक॥मनोवचो
रलोचानांचासौदर्पलेशंसुविचित्रवेषा
स्मितप्रियानंगविमोहनसादर्शगो
पेंद्रकुमारमाश्रहो॥८९॥अर्थ॥मनश्रो

हे कों सामर्थ्य नाहीं॥ छे हजो
अंचर प्रांत भाग के अंत एक को
दर्य ता एक लेश मात्र हूं मन कों
वन कों गोचर है। एतादृश श्री वं
हों श्री चंद्रावली जू श्री ठाकुर जी कि
कों अपने निकट हों। देखत सों
श्री आनंद सुधा निधि सुख माज
मग्न आदृश कुरंगा हों॥ ना शकदु
स्स है व स हस्ताम नोप्यासार॥७९
श्री ठाकुर जी को मुख के सो है सुधा
चंद्रमा है और शोभा को तो समुद्र
विषे कुरंगा हों। श्री चंद्रावली जी के
छि उवत भेंड़ निकस्त्रवु कों साम
हों निकस्त्रवे कचनाहीं हों और ह
साथ एकाये के मन हूंवे यों है॥८०॥
अपांग विभ्रमों हुं गलो रंग सान्मेत
अगाधे पातित हास्ताम्यश
रंगाच्याय श्री ठाकुर

८१॥ ऊचे को उछलिबो ताके जो अनेक असंख्या
तरंग तिन्ह करि कें तन मन आरद्र
हृदि एतानो अगाध मे डूबो कहते अब वा
हि अपडव को अशक्त है ॥८१॥ श्लोक ॥ तुम्हि
लं वादधिकलशिकां म्हु हिं संस्थापितांत्व
तें मार्गवागमनमथवा कंचुकी मंचलं
वा टहूं वास्वप्नेहमु तसखी वृंदमेषा
मती घोषाधुशाम्मज्जम पितदाना
ऽन्मो हित्तेव ॥८२॥ अर्थ ॥ हे सखी अथ
वा वालमें मो कों वेणी को गुहू नाही है अ
र दधिकलश को गुहू नाही है अथवा म
रे माथे को गुहू नां ही है अथवा मार्ग पेडे
को हू ग्राध नाही है अथवा चलवे को हू
गुहू नाही है अथवा कंचुकी तथा अंचल
का हू सुधि नाही है अथवा आपुना देह
हू की अथवा गृह घर हू की अथवा सखी
न के यूथ का खोज हो कहा है कि नाही है
य ह जो मगती श्री चंद्रावलि जु ताको
कहलौ कहूं तो घोषाधिशाम्मज्ज जो

ठकुर ... तहुको तासमय न जानत भ
ये हैं। सो हितहोय गई है। ८ श्लोक। तो
नुकूल रिवतत रंगे रूपांगपाते विंततैरि
मत्रौ। जालैर्विशालैर्वचनैः सत्तस्या स्वसं
वेद सख्य करोतु दारः ॥८३॥ सखी तदनं
तर श्री ठकुर जी ने अनुग्रह को नाइ जाके
पांग के विलास के जु चेतरंग। आनंद
चितरंग करि कैं श्री चंद्रावली जू को हे स
प्रश्री ठकुर जी ने वड वचन करि कैं। आ
नोउदार जनावत भए हैं। ८ श्लोक। स
माल दाप्रष्टमेय दासीत्व चातुर्य धैर्या
दिकमत्र युक्तिः ॥ नैवास्ति गोविंदपदप्र
तापानुभावमात्रेण विनेति मन्ये ॥८४॥ अ
तव श्री चंद्रावली जी के प्राणप्रेष्ठ तम जो श्री
ठकुर जी तिनके जो कछु होत भयो। चातुर्य
धैर्यादिक कहत हैं। सर्वथा न रहो। यह
जो करि कें चातुर्य धैर्यादिक होत भयो है
सो श्री ठकुर जी के चरणारविंद के प्रताप के
अनुभव मात्र के होत भयो है ॥८४॥
श्रीगननेन तरलांचलोचनेन ह्रि

८॥ ऊचेकोउछलिबोताकेजोअनेकअसत्यो
॥ तरंगलहरताकरिकै॥ तनमनओरदेऊ
हष्टिएतानोअगाधमेडूबोकहतेअवेषा
हिरआदवेकोंअशक्तहैं॥ ८१॥ श्लोक॥ दूसि
लंवादधिकलशिकांम्हींसंस्थापितां
चंमार्गवागमनमथवाकंचुकीमंचल
वाटेहंवास्वगृहम्नुतसखीवृंदमेषा
गतीघोषाधुशात्मजमपितदाना
दनो हित्तेव॥ ८२॥ अर्थ॥ हेसखीअथ
वा बासमेंमोकोवेणीकोशुद्ध नाहीहै॥ अ
रदधिकलशकोशुद्धनाहीहै॥ अथवामे
रेमाथेकोशुद्धनांहीहै॥ अथवामार्गपेडे
कोहंअधिनाहीहै॥ अथवाचलवेकोहं
शुद्धनाहीहै॥ अथवाकंचुकीतथाअंचल
कोहंसुधिनाहीहै॥ अथवाआपुनादेह
हकोअथवागृहघरहंकोअथवासखी
नकेयूथकोसोऊहोकहांहोंकानाहीहैं
यहएजोगमनतामेश्रीचन्द्रावलीजताको
कहतोकहतो घोषाधिपात्मजतो

ठाकुरजी ताहूकों तामसमय न जानत भ
ये हैं। सो हित होय गई है। ९ श्लोक तातो
नुकूलैरिव चतुरंगैरपांगपातैर्विततैरि
मात्राजातैर्विशालैर्वचनैः सत्वरस्यात्वसं
वेद सख्य करोदुदारः ॥९३॥ श्लोकार्थ तदनं
तर श्रीठाकुरजीने अनुग्रह कीनो ताके
अपांगके विलासके ऊंचे चतुरंग। आनके
चतुरंग करिकैं श्रीचंद्रावलीनकों हे स
खि श्रीठाकुरजीने बड वचन करिकें स्वा
मिनी उदार जन्यावत भए हैं ९४ श्लोक
मानदाक्ष्येष्टमेयदासीत्चातुर्यधैर्या
दिकमत्रयुक्तिः ॥ नैवास्तिगोविंदपद्र
तापानुभावमात्रेण विनेत्तिमन्यो ॥९४॥ श्लो
तव श्रीचंद्रावलीजीके प्राणप्रेष्ठ सम [illegible]
ठाकुरजी विषै जो कछू होत भयो [illegible]
धैर्यादिक कहत हैं सो सर्वथा न [illegible]
जो करिकें चातुर्य धैर्यादिक [illegible]
सो श्रीठाकुरजीके चरणारविंद [illegible]
अनुभव मात्र के होत भयो [illegible]
[illegible]

लिनदर हासरु चा स्य गत्पा किंव रिचे न
वकुना सखिये शलैस्त्वे: संमोह्यतां रसि
कत्वानिधिरहनाथ: ॥८॥ प्रोक्यार्थ॥ श्रीप
कुरजाजो है सो गर्व युक्त जो नव करिकैं
आर्चवलनेत्र के अवलोकन करिकैं
जो स्नेह संयुक्त सचिक्कण इत्यादि चितै
वोकरिकें दर हास करत हैं॥ सुंदर प्रव
र हास्य सुंदर है आपुनो चालकरिकैं पधा
रे॥ सखीना करिकैं मेआव वकुत हौं वि
न कहलों करूं॥ हे सखी आपुनो जो ये श
लता सौंदर्य ताते मोहित करिकैं पधारे
हैं॥ औररसिककेनिधि ऐसे जो व्रजनाथ
श्रीकृष्णचंद्र सो करत हैं॥८॥ प्र॥ श्लोक॥ प्रबोधि
तेव गोविंदव चने रूपिसुंदरी॥ अच्छुट्टदे
सरव: प्रच्युत्त रमनुत्तरं॥८६॥ अर्थ॥ जो श्रीगो
विंद सो श्रीकृष्णचंद तिन केवचन करिकैं प्र
बोधत कानों हैं सुंदरी न को॥ अतिउद्मदरदी
से प्रतिक्षा सखिनकों सो करु प्रतिउत्तर नश्री
योदेश्री॥ श्लोक॥ कथं गच्छस्वदैवेषदानं गार
स विक्रयोरसी जकां चीकलापे....

।सवा॥ ... अथ अवध्याल कहत आप
ुन है जो। तुम गोरस विक्रय के दानबि
दा ये कौं जात हौ। कहा कटि मे खला आ
आभूषणे कों राखू करिकें कहत हम को
पनी वैभव दिखावत हौ॥८९॥ श्लोक॥ यद
धीतेमदीया गतिरपि किं नावलोकिता
तु मगा। पश्येत्स्मि हि विदंती पदनिकति
चिस्मयं स्पचलतः॥९०॥ अर्थ॥ हे सुभगसु
दर

श्लोक॥

नसंम्यगवलोकिता गतिरियं त्वदीयाम
आमनोऽद्रिकमा गनानित्र गतिं पुनर्दर्श
य॥ अहो कुलवधूजनं निकट माकुयन्नि
र्यया भवान त्र गहिलत्व ते विपिनगोच
र स्फुट॥९१॥ अर्थ॥ अवध्याल कहत कह
है जो यह तुम्हारी चाल हमनी को प्रकारता
दृखा॥ और हे हलवे हमारे निकट आय के
बारबार दर्शन देव॥ अहो कुलवधू में
आव निश्चय होय कें तुम स
आलहित हो काहे विपिनगोच

कहेव न विखें प्रकट यह उइट ॥१८॥ श्लोक ॥ अ
त: परं कुतो न्वा ति स्त्वत्स हाय वत्ता मम ॥ सु
सहायी करोत्येष मामेवा हो विपर्यय: ॥१९॥
अर्थ श्री ठाकुरजी कहत हैं जो ता पाछें अ
व हमारो कोहे को डर तुम हो हमारो सहाय
हो ॥ सो तुम हो सहाय कारे रक्षा करोगे हम
तो बडो ही आश्चर्य हो ॥ यह सो विपरीत
यो है ॥१९॥ श्लोक ॥ गूढ सखा गोकुल में व
हुतं वंदे नंदस्य अद्भुत मे राज्य मार्गन श्री
विशेष योगना धर्म: ॥२०॥ अर्थ ॥ अब श्री चंद्र
वली जू कहत हैं जो हैं सखी हों श्री गोकु
ल विखें जाओ ॥ और ए सब श्री ठाकुरजी वि
खें एतादृश रहती तत्व सब श्री नंदरायजी आ
गें कहत हैं जो तुम्हारे धर्म राज्य मार्ग वि
खें कव हूं हमारे श्रवण विषे ना ही आयो है
आ थश्च तिविखें एक हत हैं ॥ वेद में ऐसो क
हें नाहीं तुम्हारो जो कुलांगना विखें एतादृ
श टोटाई करे ॥२१॥ श्लोक ॥ त्किंप्यार्जे न वस
रहं गंतु करो विचारतु यं ॥ अहमा स्त्रं पुंगो
प्यागृहमपियातुं ...

ठाकुरजी आपकहतहै ॥ जोतुमकहाइ
मिसकरिकें अपनेघरजायवेकोचतु
रूकरिकेंकहतहो ॥ जोहेसोहे गोपीहो
आपयेंतातुमकोंमें अपनेघरजानेन
दुंगी ॥ २ ॥ श्लो॰ ॥ भवान्पुरुषलक्षणः क
मुखोपिकात्वं वदत्य हो तदपि सा विध
वाप्यंगनैस्वात्मनि ॥ वंदुत्वमपितेक
पुत्रकुमारलोकोत्तर विभ्राजिनवबाहु
विजितवादिजात्पुत्तर ॥ ३ ॥

श्लोक

विश्वासमुत्पादयितुं स्त्रियोस्मान् ज्ञात्वाव
देत्येवमर्थमृगाक्षी विनैवमद्वाचमयूवि
शेषः स्वासोभवत्याभवतोथमेलोढ
अर्थः व्रिजअंगनाकहतहै जोकहातुम
[illegible]

पजावनकेप्रकारकहतहौ मृगादीय
कसखोप्रत्यककहतहै जोहमारेवचव
विनाहीहैसंवोधनत्र्यायो ओरस्वा
रे यापकारत्र्यथकरिकेश्रीकुरंगा
पकहतहै विशषहै सोश्वासश्रमकरि
केतमकोहोतहै ४ किमधिकं
सकुलागनास्वंगमदशं वचनं सोउ
शक्ता:पर किंकुर्मोनदरोजसुते
त्र्यवतमह
मकोविवेकत्र्यधिककहालोकहैजोकुल
गनात्वकहिके एहादशतुह्मारेवचनस
हेत्र्यशक्तहोयरमकहांकरेजो श्री नंद
रायजकेवराहो कुलेश
हेतातुनंदनसकुनाहिय वंदावन
गदशावनेलगती मामक
बोधनहै जोकुलेशहमजाहसो
कोपरजाणनकोंक्योंनाहीदतहो
कुरंगीत्र्यापकहतहै जोत्र्योवंदावन
कीमृगनयनीनकोंहमारादानल
अपनेमिंदनेतु

लि गत्यहं कुन्त ॥ चरणे शेरस्मिकर
पीश्याद्रुनं तद्दूरादस्माकं ॥७॥ अर्थ यहतो
हिले हम कर्वहूं ना होसुन्यो निश्चयक्रि
।पन लगे है सो कहां ॥ पांवन विखें अथ
माथे विखें अथवा हाथ विखें अथवा पी
विखें सो तो हमें को कहो ॥७॥ श्लोक ॥ श्री
हे नाथ्रि कैंचु क्या य झोपी नतुरस्तवुति
मेत्रि तिवदन्वीरः करणे स्पृशद्दूरं ॥८
अर्थ अब श्री टाकुरजी आप कहे जो कंचु
कि अंचल करिकें जो तुम्हारे उरस्थल
वेखें । गो प्यचु कि करिकें श्री नंदराय जू के
पट है । ता के आगें सो उद्भट उद्भव होय हूं
य करिकें जो महासुभट होहि हो सो ईन
रिके ▓ जाके आगे स्पर्श करत नये ॥ ती
श्लोक कथं कुलवधूजन स्पृशसि हं तमम
स्यलें न भ्रान्ति मवलं व से सकल सेत वापु
सैता: ॥ सरोजदललोचने सतत मिथु मे
धींगना स्पृशामि सखि तेकदा वसन मेतु
रुवं प्रिया: ॥९॥ अर्थ अब श्री जमना कहि
कैं कहत हैं । जो तुम कों करिकें कुलव र

जिनके मर्म स्थल विषें स्पर्श करते हैं ।। उ
त्सहो है ।। लिवकरिवे में
तव श्रीठकुर आप बोले जो हे कमल दृष्टी
ध लोचनी में हुं निरंतर या प्रकार ही या हीर
ल में गुन गान श्रीन कों स्पर्श करत हों ।। स
ये तुम्हारे वस्त्र का मर्यादक वडु त्वं घा है
श्लोक वचनो क्रीडि गृणितमुत्त करोषिक
करावु हैत :से तु : त्वद्वचन सहकृतं मन्व
रणं न्मवत्यं वा ।। २० ।। श्री अ श्रावद्भिजन क
हते हैं ।। जो तुम्हारे वचन उक्ति कहिवा ता
कार करिकें द्विगल में करते हैं ।। श्रीवश्रीठकुरजी
आपकहत हैं ।। जो तुम्हारे वचन को दाऊ सा
मर्थ्य कीये ते जवु हमारे श्रीर तुम्हारे वचन
दाऊ साथ कीये हैं ।। श्रीर आपने करनके हे
क्रीया कहिये भाव वोधक व क्रोक्ति ।। २० ।।
श्लोक वाकूचातुरीधुरीणं जानीमस्त्वा तुनं
नृपसूनु ।। कितिडुलामिति परमिह दानं
धिशुं कृतं नेवं ।। २१ ।। श्लोक वचन चातुरी
धुरीना कहते जा के रितो हम जानें जो तुम
श्री वृंदावन कृष्ण के पुत्र हो ।। श्रीपं चन्द्र

गनो॥ हयदवद्भदस्नलरूपमित्युःहेनाम
याजातमुत्तमं॥ ६॥ अर्थ॥ जववालकयाप्र
कारकेह्या॥ तवश्रीठाकुरजीआपकहतहै
जोहेवल्लभांगने॥ तुमतोश्रीवृंदावनविषे
वेचिवेजातहो॥ औरपासयमुनाजलविषे
सिंदुराघरस्थितिहो॥ अथवातुमएसीके
कहतहो॥ हेवल्लभांगने॥ जोयाकरिकेंदे
करिकेंकहतहो॥ जोयहहैं हयहाय ह
एलोउत्तमनुष्यारस्वरूपअवलोहमनज
न्यो॥ ॥ ६॥ श्लोक॥ व्यात्तःपरं सुंदरिगारस्थक
तोस्त्वमुल्यं किमयाहवस्का॥ उरःस्थले
स्थापनयस्थलदंयमदन्यपुंसोनतुतन्मपू
वा॥ ७॥ अर्थ॥ श्रीठाकुरजीआपकहतहै
जोसुंदरीयहतोगारसकोमित्रमात्रको
याहे॥ सोतोकया॥ याकोमोल्यकहाकरे
कहंयावस्तुकोमोलकामोलक्या हे॥
मउरस्थलविषेस्थापनकरिकेंटाकके
केलेकेजातहो॥ सोमेतेअन्यपुरुषहोय
कोनाहा॥ देखोवनो॥ मोहंकोदेखनो॥ १
श्लोक॥ सत्तंवृंदकाननमागच्छामःपुं

दानं॥ तो जाचुक्कै तिम पुत्रकु तो वय
प्रदास्याम: ॥२६॥ अथ अवक्रजन्म
हत हैं। हम तौ निरंतर श्रीवृंदावन विषै
रत है॥ पर द्रव्य कौ दान नही। किया
कबहू सुन्यो है नाही है। तातें को कहि
हमैं तम को दैगनै॥ २६ ॥ श्लो० अथ
यदृशा वधि चौरहिर्या नदत्तमया हमंश
स्तत्ता दानं गृहीष्यामि सरोरुहाक्षी
क्षणं पुरा विश्रमतात्त्वयेव॥ ३०॥ अथ
श्री ठाकुरजी कहत जो। अयं यह मेवा
बन जातो ऐसा न चोरी कारी। तिक कि
दान नदीनो है प्रथम पराय वस्तु
अब मैं पहिलै सें चोराकिर नहीं
अब दान मैं लेहुंगो। हे कमललोचनी फिर
लेहां ए वि श्राम करिके सुख ला व में
ही पाव लाइ ॥ ३० ॥ श्लो० गहागार्ता
प्रख र सु रवि ह्लान्य पिवत नद
हन्तुत्रतनिवृतां गताक्षत नवः कुरिशा
विपुवचन मा ...

गनेहृयदवृक्षदस्लत्स्व हृप मिन्तुःहे नाम
याशानमुत्तमं ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ जव वालक याप्र
कारकैह्यो ॥ तब श्री ठाकुरजी आपक हृतेहैं
जोहे वल्लभांगना ॥ तुम तो श्री वृंदावनविषै
वेचिवे आइहो ॥ ओर पासयमुनाजलविषै
देत्य लोरस्थितिहो ॥ अथ वात म एसीकै
कहत हो ॥ हे वल्लभांगना ॥ जो या करि कै वै
करिकै कहत हो ॥ जो यह हैं हृय हृय ह
ए लोउत्तम तु यार स्वरूप अवलो हमनग
न्यो ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ व्याजःपरं सुंदरि गोरस्यक्र
तो स्व मुल्पं किमयाहवस्त ॥ ठः स्थले
स्थाप्य नयस्थलद्यं मदन्यपुंसो नहृतन्मपु
वा ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ श्री ठाकुरजी आप कहत हैं
जो सुंदरी यह तो गोरसको मिष मात्र की
यो हे ॥ सो तो कायो ॥ याको मोल्य कहा करे
कहै या वस्तु को मोल को मोल काय्यो है ॥
मउरस्थल विषै स्थापन करि कै ढांकके
कै लेके आई हो ॥ सो मेरे अन्य पुरुष यह
कौं नाहीं दिखावनो ॥ मोहीकों दिखनो ॥
... यत्तां वृंद काननमागच्छामः पर

रानानोजातुश्रुतिमपिताकुंतोवयं
सप्रदस्याम:॥२६॥ अर्थ अव ब्रजमंड
लतेंहोंहमतोनिरंतरश्रीवृंदावनविषें
रहतहैंपरचेहूधनकोंदाननहींकधा
कीवहसुन्योहूंनाहींहैंतामेंकोकरि
समतमकोंदेंगेनंदगो॥२६॥ श्लोक अथ
यदद्यावधिचौरिकपानदत्तेमयाहमशे
त्तस्तत्तादानंगृहीष्यामिसरोरुहाक्षी
रणंपुराविश्रमतत्त्वयेव॥२७॥ अर्थ श्री
श्रीठाकुरजीकहतजो॥ अये यहलंबो
धनजानतोस्रोआजनचोरीकरिनकरिकें
दाननहींनाहेप्रथमसांपेशप्रयंततक
सोअवमेंपहिलेंसेंचोरकरिगईहोंसो
सवदानमेंलेंरुगो॥ हेकमललोचनपह
लेंदाएंविश्रामकरिकेंसुखतात्रयेतुमा
रेंहीपासलाऊंगो॥२७॥ श्लोक॥ गत्वागावो
दूरंप्रखरखुरविक्षान्यपिवनेनदृश्यन्ते
हन्तद्रुतमितोगच्छततत॥ इतिश्रीगो
विंदप्रियवचनमाकर्ण्यखमयं ५१

नांज्ञापंयट्टुसहिगोरनएविधौ॥२८॥
एतेमेंएकसखावालकनेंआयकेंरिकों
कुरजीसांकह्योजो॥ गयतोदूरगइहो॥रघु
रकेचिन्हदेवनविखेंनाहीदेखियतुहे॥
हांतेंदूरगईतहो॥इहश्रीगोविंदजोश्री
ग्रोवंदप्रियवचनकर्णसुनिकेंतवगोप
कोंजनायगयनेकारहाकाविधिगोप
कोआज्ञादतेभयेहे॥२८॥ नचेष्ट
तगोपपुत्वेषामासीटत्तिप्रयं॥अतिप्रभु
तोप्रोचुःप्रमातिरायनिर्भया॥२९॥
येजवगोपसवातवश्रीटाकुरजीगोपिक
कोंआपमेंअत्यंतयहदूरवांछितजानकें
वअत्यंतप्रसन्नहर्षसेंपत्तहायकेंकहे॥
रप्रेमअतिशयहायकेंनिर्भयहोकरि
कहतेहें॥२९॥ विपरीतमहोवयमे
लवृजगोपनितंविविचोरजनाः॥विप
विजनेप्रमदाहधनंवरसाधुजनः॥स्वय
परं॥३०॥अर्थ॥अवकहतेंहेंजयजो हेवृ
पवित्रंवनीहेयहवडोआश्चर्यहेजोतुम
नहेजोविपरीततुमारोसवरूपनिसोहे

हैं जंगल अग्नि में गोपाल चौं धन फ
खड़ी और कहत हैं जो सब साधुजन में ॥
हैं या प्रकार सो है जन लोक ॥५॥
विपरीत भव लोधर्मा धर्म ग
ध्यान ॥ निर्मल दान पुनि
जवा कों ॥ या कार्य आपथ्यो तिकू
कहत हो जो है सु कमल न पूल
होते विपरीत धर्म
मध्य नाहीं दान
कहत है जो हैं मागदान

१· नाज्ञापयद्गुरुस्तिगोरतरोविधौ ॥१८॥ भावा
एतेमें एक सखा बालक नें आयकें श्री
कृष्णजी सों कह्यो जो गाय तो दूरि गई है। खु
रके चिन्हहू वन विषें नांही दिखियतु हैं॥ इ
हां तें दूरि गई है तहां॥ इहश्री गोविंद जो श्री कृ
ष्णचंद्र प्रियवचन कर्णे सुनिकें जब गोप
कों ज्ञानाय गाय नें कारत्वाकांचिधि गोप
कों आज्ञा दत्तम्ये है॥ १८॥ ... गच्चेबु
लगोपेषु स्वेष्मासाद्दिप्रियं॥ अतिप्रमुदि
ताश्च: प्रमातिशयनिर्भया:॥१९॥ अर्थ ग
ये जब गोप सब बालव श्री ठकुर जी पकान
कों आप में आनंद यह दृष्ट वांछि तज्ञान कें त
वश्चयंत प्रसन्न हर्षे पत्त हायकें कहे॥ आ
र प्रेम मे अतिशय होयकें निर्भय होकरि कें
कहत हैं॥ १९॥ ... विपरीतमहो वयमेव कि
ल व्रजगोपनितं विनिचोरजना:॥ विपिने
विजने प्रमदेर्धनं वर साधुजना: स्वयमेव
परे ॥२०॥ अर्थ जब कहत हैं नयजो है व्रजगो
पनितं वनी हाय यह बडो आचर्य है जो हम कह
त हैं जो विपरीत हमारो स्वरूपनि सृहे और

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कहत है [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] धुला

[illegible]

[illegible] है।।श्रोरसें

[illegible] तो।सुखरूपमें

[illegible]

[illegible] महो।चोदा [illegible]

[illegible] नदे।।नयेहै [illegible]

[illegible] प्रु कोपि [illegible]

[illegible]

मुखे २३ अवस्त्रिजमोहगोप
काकहतहैं औयाप्रकारकुलस्त्रीनिरखें
कांतवनमेंपारीतकरतहीं याप्रकारस
आश्चर्यकरिकेआपमुखकमलनिरखेंहाथ
करिकैंश्रीठाकुरजीगंडस्थलनिरखेंनख
लगवतहैं २३ अंगत्वादानम
लगेसोरंभेनतांबूलरेखितकपोलयु
नचाद्य सौंदर्यसीमनखरांकितवदर
च युक्तानिजंगृहमुदारकथंगमिष्य
श्रीठाकुरजीप्रतिश्रीस्वामिनीजीकहत
हैं औतुह्मारेमुखकमलतेंनिलगेएज
हतअसाधारपरिमलकरिके मेरोअंग
मुखनिलगेसोरंभसुगंधसोभयोहै आ
रतुह्मारेतांबूलकेपाककेरेखातें दोनो
गालअद्यतें औरसौंदर्यकीहदनखके
अंकितवदस्थलतांईभयोहै औरउदार
होयकेंआपनेघरकोंजाऊंगीकहतभई
२४ कथंहारःचुगे:कथंमुवलया
नांविरलना विलवःकेनासौदृषिकलशि
काकुंतकिमद्भूरप्रियेत्थंप्रह्वाहंनिज

जानाम्येस्वरभसंकिमारत्यासेत्वीणां।
जनवशीजीवनविधि: २५
अब हमारे भरतार हमकों पूछे जो तुह्या
मोतीन के हार टूटे कहा और तुह्मारी चु
कलरन्यारीन्यारी टीकी क्यो क्रा हे भ याहि
र नित्यती सवारे आवते त्याउर लोगि
च कहा भयो कहा रहे हते तुह्यारी दृष्टि
लशे कहा होत भई है हमारे प्रियजो भ
र या प्रकार पूछे जो हमको तवहम आ
मे गुरजन सासु ससुर देवर जेठ देखत
हुवहीं चकितर हैगे हम कहा कहेंगे जी
वनकी विधि २५ सत्यंस्त्रीणां जीवन
मन्यायत्तं परं न गोपीकानां महधानम
व किंतु प्रियसखि चित्तं कृतो भीतिः २६
अब श्रीठकुरजी आप कहत हैं जो
त्तीन के जीवन पराये आधीन है कैापि
कान सबकुन्हारे नहीं हम को है को डर
पत नहीं है प्रियसखी कीं तनुम मन आ
धीन है २६ नाकुल मखिलेनां
वक्रमनन्य शरणं विशपतो गाण: किं
त्वस्मिन्हरकिंचित्कथितं त्वया ।

मुखे २३ अथश्रीजगन्नाथ
काकहतहैं आयाप्रकारकुलस्त्रीलिखें
कांतवनमें पारीतकरतहैं याप्रकारस
आश्चर्यकरिकें आपमुखकमलविखें हाथ
करिकेंश्रीठाकुरजीगंडस्थलविखेंनख
स्पर्शकरतहैं २३ अंगत्वादानमी
लणेसौरभेनतांबूलरेखितकपोलयु
नचाद्य सौंदर्यसीमनखरांकितवत्स
चयुक्कानिजंगृहमुदारकथंगमिष्ये
श्रीठाकुरजीप्रतिश्रीस्वामिनीकहत
हैं जोतुम्हारेमुखकमलतेंमिलतणें अ
द्भुतअसाधारणपरिमलकरिकें मेरेअंग
सुवमिलतणेंसौरभ्यसुगंधसोभयोहैं औ
रतुम्हारेतांबूलकेपीककेरेखातें दोनो
गालभयेहैं औरसौंदर्यकीहदनखके
अंकितवत्सस्थलताईभयोहें औरउदार
होयकेंआपनेघरकोंजाऊंगीकहतभई
२४ कथंहार:त्रुटे:कथमुवलया
नांविरलताचिलंब:केनासीदूधिकलशि
काकुंतेकिमयूहर प्रियेत्थंपृछाहंनिजगु

जेनाम्र स्वरभ संकिमारस्यासेस्यौलेप
रेजनयशोजीवनविधि: २५
अवहमारेमेरनारहमकोपूछेजो तुम्हा
मोतीनकेहारहे कहा और तुम्हारी चु
ऊलरन्यारीन्यारीटोलीकोकाहेनयाह
रनित्यतीसवारे आवते सोकसुलोगि
वकहेमया कहांहेहेस तुम्हारीरभि
लशोकहांहोतभईहे हमारेप्रियजोन
रयाप्रकारपूछेजोहमको तवहमन्या
मेमुरजन सास ससुर देवरजेट हेसुत
वहींवप्रिकिसरहगे हमकहाकहगे जी
वनकोविधि २५ सत्यंत्वीलोलोवन
मन्यायत्नंपरनगोपीकानां मदधानम
विकितुप्रियस्खयितानुकुलानीति: २६
अवयोनकुंजोआपकहहनहि जो
तानकेजीवनपरायसाधनहेसोपि
तानसबहुलागेनहः तुमकाहेकोड
पतनहो हेप्रियम्मयाकेतनमनल्ला
धानहो २६ गोकुलनविन्को
वल्कमनन्मदानलोविदापलापोनः
श्रुत्वानिटकिंचिस्कचिदुया

॥२४॥ याको अर्थ श्रीव्रजांगना गोपीसखी क
हत हैं जो गोकुल पूर्ण तुमारो है और गो
लं पूर्ण निश्चै करिकैं तुम्हारो अनन्य शरण
है किंतु तुम्हें हमसें थोरो मत्ति कोउ क
यही हमकों भय है॥२५॥ श्लो॥ वशीकर्तुं प्र
णयं वा लोगोविंदमानसम्॥ नासक्तोत्पु
रयांतु प्रेमपूर्णाअरायतः॥२६॥ याको अर्थ
हरानको वाणो है सो श्रीगोविंदके मनको
वश करिवेको प्रविष्ट भई है सो हावा ना
है तें निकलनें नसकों पुनरवार हृदमध्य
प्रेम तें पूर्ण होय कें जराभयो निकलन सको स्या
आऊं किंतु न वृषभानुवं प्रकटी करो विकिन्ह
वा॥ नान्यः श्रणोति कश्चित्किं भयमवलंव
सेनाथ॥२७॥ याको अर्थ ठाकुरजी कहत हैं
जो हे प्रियगोपिकान तुम छल करिकें कों
कहत हो अपनो भाव प्रकट क्यों नाहीं क
रत हो अन्य कोही नांही सुनेगो काहे भय
कों अवलंवन करत हो नाथ॥२८॥ श्लो॥ कुं
शांति दधिभाजनं शिरसि ते मनागद्गप्रम
पाहं वतनपार्यये विपुलभारमाभाति मे
चारत्रु विनिधेहि तावदलं मया करश्यां

प्पयंमलयमारुतोवहत्तिसोपिया
र्थत्तो॥२०॥याकोअर्थश्रीठकुरजीआप
त्तहैंजोहे कृशांगीदधीकोपात्रतुम्हा
माथेपरहे जोपारनाहींपावत्तनेकदे
विकोइसामर्थ्यनाहीहे और बहुत
रमथेपरधरकेफिरत्तहो यात्तेमाथे
भारउत्तारकेंत्तणमात्रसुखत्ताव हसी
गंधपवनवहत्तहे सोतुम्हारेअर्थहीं॥छं॥
कुसुमसुकुमारांगश्रीमन्दारत्तरे
नाकुंरस्विवरवासोप्यत्तद्वयंनस्हामहे
णेमिहत्तदस्माकंहस्तेकुरुव्रजवल्लवी
यनरुषयोर्नीरंनाथत्वमस्यत्तिसुंदरः
२१॥याकोअर्थगवृन्दिभक्तिकहत्तहैं जो
कुसुमसुकुमारांगे फूलजैसो सुकुमार
अंगहैंतुम्हारोकांतिमानउदारबहुत्तबडो
तुमनेतुम्हारेउरस्थलविरवजोअंबरवस्त्र
ओपोतावरहैयह हेएक औरदुसरोव्रिजा
मनसुंदरस्वपजोनेयनमछकेतुमनीर
तुम्हारेनरूपतुमहो औरहेनाथतुमरामसे
सुंदरहो औरहमारेबमारे

हि नामानि में सामग्री अस्पष्ट

२७॥ टीका॥ याको अर्थ श्री व्रजांगना गोपीसं
हत हैं जो गोकुल पूर्ण हमारो है और गो
कुल पूर्णो नित्य श्रीकृष्ण के हमारो आनन्द सार
है किन्तु सुख है मन सों यो रोम नित कोऊ के
यही हम कों भय है ॥२७॥ श्लोक॥ वशीकर्तुं प्र
हृदय वा लोके गोविंद मानसम ॥ नासन्क्ष्यो
राधायां तु प्रेम पूरा व्रजायतः ॥२८॥ याको अर्थ
ह श्रीगोविंद के मन को
हरन को वारो है सो श्रीगोविंद को मन
वश करिवे को प्रविष्ट भई है महावान
है तें निकलने न सको पुनि नरवार हृदय मध्य
प्रेम पूर्ण होय कर राधा ये निकलन सों
आगे किन्तु न रूप भाव प्रकट करों किन्तु
वा ॥ नान्यः कश्चित् किंनय मवलंब
हेना थ ॥२८॥ याको अर्थ ठाकुर जी कहत हैं
जो हे प्रिय गोपिकान तुम सकल करि के क्यों
कहत हो आपनो भाव प्रकट क्यों नाही क
रत हो अन्य कोही नाही सुनेंगे काहे नय
... हो अन्य कों हीनाही सुनेगो कोहे नय
कों अवलंबन करत हो नाथ ॥२९॥ श्लोक॥
श्रान्ति दधि भाजनं शिरसि तेमना गड हृष्ट
पहं वत नपारये विपुल भार मान्यालिमं
नारक विनिधेहि नाहद लम पांकुठ श्रीं

प्ययंभलयमारुतो वहत्तिसोपिया
र्थतां॥३०॥याकोअवश्रीठकुरजीआप
तहैंजोहे कृशांगीदधीकोपात्रसुमा
गथेपरहै जोपारनाहींपावतनेकेदे
विकोइंसामर्थ्यनांहीहैं औरवुइत
ारमथेपरधरकेफिरतहो याते माथे
भारउतारकेदाएमात्रसुखतोव है
गंधपवनवहतहै सोतुमारेअर्थ है
हेमकुसुमसुकुमारांगश्रीमत्युदा
नांकुंरखिवरवासोप्पत्तदयंनस्त्हह
एमिहत्तटस्माकंहस्तेकुरु कु
नयनरुषयोर्नीरंनाथत्वमस्य
॥३१॥याकोर्थश्रावृिजभक्ति

गुद्यानंमदीयमत्रजेशत्वदीयोहरी
नकस्पैतदेवंकथंत्वत्क्षियोगात ॥ २१ ॥
श्लोकेयश्रीठाकुरजीआपकहतेहें
हेसरोजावलीतुमधृथकोभोजनहा
औरवेगहूमारोदानदेहु ॥ नवत्रिजन्म
नउत्तरदेतहें ॥ एतेतयाप्रकारकोकहे
किसकोदेवेंकोनतुमारीउतरीयह
कोंयोगातकहतहें ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ धृत्वे
शिरस्थंकलशंकरेणस्थितेप्रियेके
पुरोवदामि ॥ भस्वंभवत्येनदित्विवुवा
गोन्यथातयद्वाजनमेवमुक्त्वा ॥ २३ ॥ श्लो
काअर्थ ॥ तदनंतरश्रीठाकुरजीआपने व्रज
भक्तनकेमाथेऊपरऊपरतेपरकलश
कीस्थितिहें ॥ सोश्रीठाकुरजीनेआपने
व्रजभक्तनकेमांथेऊपरधरी ॥ जोयह
कलशफुटतहें ॥ हमकोनकेआगेकहें
याप्रकारकहतपृथ्वीऊपरएकभाजन
कोंगरावतभये सोपृथ्वीऊपरकहें
॥ २३ ॥ श्लोक ॥ तदायुधाकल्पानिजमुखपदेव
प्रियतमंनिमग्नेवपाकंविलासचिरं
[illegible]कथमानंगदेशकोयंत्वदभिमुख

श्री...हैं ...श्रमत... १२४...
...कुटी मिस्युद्ध नतर नि... कागज
...मधि कत्ता नाधरर हो।।३४।। याकेतव्
...चंद्रावलीजु आपुने देउ श्रीहस्त कर कें
पुन प्राणप्रान धर यको पकरि कें ...जस
...कर कें कहत भइ हैं कुंजतें तुम वेग
...में जायवे कों श्रीठाकुरजी कहात ...
...स ठीकु ... चहैं। जो हमारे श्रीमुख के आ
...तें जावे कों शक्ति नाहि हे जायनम कों ग
...हेतें जो अधरर स को पान करिवे कों अधी
...रता कुति तर हो जो अधिकार ना पारस...
...कुति तं गई ।।३५।। श्लोक मया धृतं यकम
लाक्षि किं वा नया धृत्तो हव स्त्वमे वा। सम्पुष्ट
येनागर को विरोधो विनाज वस्पतं कुतं
नीयो ।।३५।। याको श्री ठाकुरजी कहत हें
जो रे कमलनैयनी हमतुम कों धारन की
ये हें। किं वा तुम हम कों धारन कीयेहो ...
वहें नागर कहो विरोध हें। बिना आगे
पातों धरउर कों नीवी ग्रंथि।।... ...
मे वन मध्य स्थावा दिनो ग... ...
...वयो ...सिनी ...

अथ श्रीठकुरजीयास

चि: २६ कोंकहतहै जोतुमहीहमैंहेठगहीहै

केवाचमध्यस्थहो राधयाकहै जोहमा

रेकहेहमदेहगीहै जोतुमदेहगीच

नीकहो सोकमलनिकेमालमैंजोहक

त्तनुइतनोवाचअत्तरायनाहीहै २६

छिलाषनतिसरवायंत्वदगस्यगामि

षयासुभग: त्वंकुरुमनोनुरंजनंम

धैर्यप्पशक्ताया २७ सखीश्रीठ

जीप्रतिकहतहै जोहेसखीखिन्न

नहोयरवीसुभगसुंदरतोभाग्यमानतुम

रेअंगकेसंगकोअभिलाषाविरवैहै

भगतोतुमयाकोमनहरिहाथोहोनि

करोयाकोअवधैर्यकरिवेकोयहअ

कहै २७ त्वत्संगागमनस्पृहापु

सखिधरमोदविरासीत्: अन्यामपि

मित्रसदृशीकर्त्तुंवांछस्ययेकिंतु २८

अवश्रीचंद्रावलीजूसखीप्रति

हतहै हेप्रियसखीतेरेसंगआइवेकी

मेयहप्रगटभयोहै यहफलपायो

कहतोपुजैसीकरिवेकोकहतुमको

नहो औरकोमनजैसीकोचाह

३८ तदामुदानिक
सिकरं नवप्रणयप्रार्द्दहृदे
३८ ञावथातकुद
पुनो स्पर्शकरि वेकोविरहे
पत्तासोहै

ञामानद मास्पृसो त्रिव
:प्रियस्वाकृत्तं करपल्लवे पि
लेप्पस्पृशन तास्का
णवशाद्वाधाप्रियेप्रय
तथा विधनवचनेनास
३८ ३८